

# क्षितिज

सितंबर-दिसंबर, 2022  
(संयुक्त अंक)



हिंदी दिवस समारोह - 2022



# अनुक्रमणिका

## संरक्षक

श्री एन. रामस्वामी  
ram@gicre.in

## संपादन

श्री राजेश खडतरे  
rajeshk@gicre.in

श्रीमती प्रेरणा पुत्रन  
preranap@gicre.in

सुश्री अपर्णा सिन्हा  
avsinha@gicre.in

श्रीमती जयश्री डहाळे  
jdahale@gicre.in

सुश्री इन्दिरा  
indira@gicre.in

## प्रकाशन समिति

श्री सचिन्द्र साळवी  
श्री देशराज चढार  
श्री मनीष तिवाडी

## संपर्क

संपादक  
क्षितिज  
भारतीय साधारण बीमा निगम  
राजभाषा विभाग,  
सुरक्षा, 170, जे. टाटा मार्ग,  
चर्चगेट, मुंबई - 400 020

## मुखपृष्ठ



स्वर्ण हुई अब हीरक भी हो,  
जयति जयंती हर्षमयी,  
श्रेष्ठ कार्य, उत्पादन क्षमता,  
दिखलाई हम गर्वमयी . . .

## विषय

## लेखन

## पृष्ठ सं.

● अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से	देवेश श्रीवास्तव	4
● संपादकीय	अपर्णा सिन्हा	5
● पदोन्नत कार्यपालकों को बधाई	राजभाषा विभाग	6
● निगम में स्वर्ण जयंती समारोह	मीनाक्षी डांगी	7
● विमानन बीमा संगोष्ठी - 2022	सचिंद्र साळवी	8-9
● 18 वां बीमा शिखर सम्मेलन	जयश्री प्रभू	10-12
● टॉलिक द्वारा निगम को राजभाषा पुरस्कार	जयश्री डहाळे	13
● निगम की 50वीं वार्षिक आम बैठक	सचिंद्र साळवी	14-16
● सिंगापूर अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमा सम्मेलन - 2022	सचिंद्र साळवी	16-17
● दिल्ली संपर्क कार्यालय में हिंदी पखवाडा	दिनेश चंद	18
● निगम के प्रधान कार्यालय में राजभाषा पखवाडा	जयश्री डहाळे	19
● हिंदी दिवस की झलकियां	राजभाषा विभाग	20-23
● पुरस्कृत रचनाएं	विविध	24-26
● स्वतंत्रता के 75 वर्ष	स्वर्णिमा अग्रवाल	27-29
● वैली ऑफ फ्लॉवर्स	नीलम शानभाग	30-32
● कार्मिक समाचार	मानवा संसाधन विभाग	32
● निगम में सतर्कता जागरूकता सप्ताह	जयश्री डहाळे	33
● जागरूकता सप्ताह - पुरस्कृत रचनाएं	विविध	34-36
● कविताएं - समय कहां हैं ? टाइम आता नहीं, लाया जाता है...	प्रतीक शर्मा वेदांत झकरवार	37
● नेवी मेरॉथान - 2022	सचिंद्र साळवी	38
● स्वास्थ्य समस्या - पीसीओएस	डॉ. अनुराग राऊळ	39-40
● सतर्कता संबंधी कार्यशाला	अजीत बारला	41-42
● चित्रांकन	विविध	42
● हिंदी प्रतियोगिता प्रश्नमंच - झलकियां	राजभाषा विभाग	43
● सितंबर, 2022 के वित्तीय परिणाम की समीक्षा	कार्पोरेट कम्युनिकेशन्स विभाग	44

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से संपादन मंडल या कंपनी का सहमत होना जरूरी नहीं है.

यह अंक निगम की वेबसाइट [www.gicre.in](http://www.gicre.in) पर उपलब्ध है. आप अपनी प्रतिक्रियाएं [kshiti@gicre.in](mailto:kshiti@gicre.in) पर भी भेज सकते हैं.

## अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...



साथियों,

नव वर्ष की शुभकामनाएं. नएपन के साथ नई उम्मीदें, नई उमंगें और आशाएं जुड़ी रहती हैं. हौसला, उम्मीद, करुणा और प्रेम, ये मनुष्य होने के प्रमाण हैं. नव-वर्ष के स्वागत में दो पंक्तियां प्रस्तुत हैं -

घोर निराशा में अडिग जो, देख हौसला तूफ़ाँ भी थम जाते हैं,  
झिलमिल उन दीपों को देखो, चिर तम उजियारा कर जाते हैं.

देश अपनी आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए अपने उन बलिदानों को याद कर रहा है, जिनके कारण आज हम आज़ाद देश में सांस ले रहे हैं. हम अपने सेनानियों के स्वप्नों को पूरा करने और देश को वैश्विक अगुआ बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं फिर चाहे वह अर्थव्यवस्था हो, विज्ञान और प्रौद्योगिकी हो, कृषि हो,

या फिर खेल हो.

देश की स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष के उत्सव के साथ-साथ हमारे निगम ने 50 सुनहरे वर्षों का सफर पूरा किया. 1972 से अभी तक की यात्रा कठिन तो रही, लेकिन रचनात्मकता और नवाचारों से भरी रही. कई उतार-चढ़ाव देखे, खुशियाँ थीं तो तकलीफें भी रहीं. अपनी तकलीफों से उत्साह और जोश के साथ लड़ते हुए आगे बढ़े, यही जज़्बा हमारा सहयात्री रहा, जिसने आज इस मुकाम तक पहुंचाया है. जीआइसी को महान वित्तीय संस्थान बनाने वाले संस्थापकों को इस अवसर पर नमन करते हैं. इस साझी सफलता के हकदार पूरा जीआइसी परिवार और हमारे अग्रज हैं. जीआइसी एक परिवार के रूप में आगे बढ़ा है और सदैव अपने कर्मचारियों के प्रति प्रतिबद्ध रहेगा. यही एकता और स्नेह हमें एक निगम के तौर पर अलग करता है. इसी मज़बूती, जुनून, दृढ़ता और संकल्प के साथ हम अपने सफर को यँ ही जारी रखते हुए समृद्धशाली 'शताब्दी वर्ष' की ओर बढ़ने का आह्वान करते हैं.

हमारी कंपनी निरंतर अपने प्रदर्शन में सुधार करती रही है. वित्त वर्ष 2021-22 में 'सॉल्वेंसी अनुपात' पिछले वित्त वर्ष (1.74%) की तुलना में बढ़कर 1.96% हो गया है. इसके अलावा भारत में बीमा प्रसार के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाते हुए हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं. आईआरडीएआई ने 2047 तक सभी भारतीयों को बीमा प्रदान करते हुए 100% बीमा कवर का लक्ष्य निर्धारित किया है. भारतीय पुनर्बीमाकर्ता होने के नाते इस यात्रा में जीआइसी की महत्वपूर्ण भूमिका है.

हमें अपनी यात्रा में अपने मूल्यों और भाषा को सदैव साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए. हिंदी भाषा में काम-काज को बढ़ाते हुए सरकारी प्रतिबद्धताओं का तो पूरा करना ही है. साथ ही, अपनी भाषा के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए इसकी उन्नति में सदैव प्रयास करना चाहिए. निज भाषा को त्यागकर हम प्रगति के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकते हैं. हजारों वर्ष पुरातन जीवन को संजोने वाला माध्यम एक भाषा ही तो है जो हमें अपने मनुष्य होने का अहसास भी दिलाती है.

आइए, नववर्ष में हम सब मिलकर उम्मीदों को रौशन करते हुए दुनिया को खूबसूरत बनाने का संकल्प लें...

● देवेश श्रीवास्तव

## संपादकीय

यह हम सबके लिए खुशी की बात है कि निगम ने इस वर्ष 22 नवंबर को बीमा के क्षेत्र में अपने 50 वर्ष पूरे करके 51वें वर्ष में पदार्पण किया है। 50 वर्ष अर्थात् अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है। स्वर्ण-जयंती शब्द ही अपने आप में एक उत्साह भर देता है और निगम तो अपनी स्थापना के बाद से निरंतर प्रगति कर रहा है। बीमा व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण के बाद 1972 में एक सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनियों की नियंत्रक कंपनी के रूप में स्थापित और नवंबर, 2000 से विश्वभर में पुनर्बीमा कंपनी के रूप पहचान रखने वाली इस कंपनी ने देश की प्रगति में हमेशा अपना योगदान दिया है। 'आपात्काले रक्षिष्यामि' घोष वाक्य पर विश्वास करने वाली इस संस्था ने हमेशा ही अपनी वचनबद्धता को निभाते हुए अपनी ज़िम्मेदारियों को निष्ठापूर्वक निभाया है तभी तो आज हम वैश्विक शीर्ष पुनर्बीमाकर्ताओं की श्रेणी में आते हैं।



यह एक संयोग है कि इसी वर्ष देश को स्वतंत्र हुए 75 वर्ष हुए हैं और देश स्वतंत्रता का 'अमृत महोत्सव' मना रहा है। विशाल जनसंख्या वाला हमारा देश जहाँ लोगों की भाषा, रहन-सहन, खान-पान आदि में भिन्नताएँ हैं, लोग अपनी भिन्नताओं के बावजूद मिल-जुलकर देश की प्रगति में निरंतर अपना सहयोग दे रहे हैं। आज विश्वपटल पर भारतीयों ने अपनी बौद्धिकता का परचम लहराकर देश का नाम रौशन किया है। भारत दिन-प्रतिदिन सक्षम और आत्मनिर्भर देश बनने की दिशा में अग्रसर है। हमारी सशक्त आर्थिक नीति और लोगों के उत्तरोत्तर बढ़ते आर्थिक स्तर को देखते हुए आज बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इस देश को एक बहुत बड़े बाजार के रूप में देख रही हैं और किसी भी तरह यहाँ अपना व्यवसाय विस्तृत करने की योजना बनाती रहती हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि देश की प्रगति में बीमा का भी बड़ा योगदान रहा है। उद्योगों के विकास में बीमा का बहुत सहयोग रहा है।

भारत में सदियों से एक प्रांत से दूसरे प्रांत के लोगों के बीच संवाद का माध्यम रही हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी देश भर में उत्साह के साथ हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पिछले 75 वर्षों में हिंदी भी इतनी विकसित हो चुकी है कि अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी पहचान बन चुकी है। जहाँ लोग पहले भारत में ही महत्वपूर्ण मुद्दों को और मंचों से अपने विचारों को हिन्दी में रखने में संकोच प्रकट करते थे, अब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी हिंदी में संबोधन करने में हिचकिचाहट महसूस नहीं करते।

आइए, हम अपने निगम के विस्तार, देश की प्रगति और राजभाषा हिन्दी के प्रसार में दिल से जुड़ कर प्रयत्न करें ताकि जिन कठिनाईयों का सामना करते हुए आज जो मंजिल मिली है वहाँ से और आगे बढ़कर नई उंचाईयों को छू सकें।

● अपर्णा सिन्हा

## महाप्रबंधक सुश्री मधुलिका भास्कर को निगम की निदेशक बनने पर हार्दिक बधाई . . .



महाप्रबंधक सुश्री मधुलिका भास्कर भारतीय साधारण बीमा निगम (जीआइसी री) में अब निदेशक के पद पर नियुक्त की गई हैं। वे वर्ष 1988 में जीआइसी री में सीधी भर्ती अधिकारी के रूप में भर्ती हुईं और उन्होंने निगम के साथ 34 वर्षों तक काम किया। इस अवधि के दौरान, उन्होंने पुनर्बीमा संचालन, पूल, तकनीकी बीमाअंकन, विदेशी संचालन, निवेश, लेखा परीक्षा, संपदा और स्थापना, ईआरएम और सीएसआर जैसे विभिन्न विभागों को संभाला। उन्होंने मुख्य जोखिम अधिकारी, वित्तीय सलाहकार, लेखा परीक्षा प्रमुख और सीआईएसओ के प्रमुख प्रबंधकीय पदों पर कार्य किया है।

अपने महाप्रबंधक पद के साथ-साथ उन्होंने 6 महीने की अवधि

के लिए न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक का पद भी संभाला।

सुश्री भास्कर मुंबई विश्वविद्यालय से माइक्रोबायोलॉजी में एमएससी और भारतीय बीमा संस्थान से फेलो हैं। उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय से कंप्यूटर प्रबंधन में डिप्लोमा भी किया है। वे अपने समृद्ध अनुभव को साझा करने में बहुत रुचि लेती हैं और वे अपने असाइनमेंट के माध्यम से नेशनल इंश्योरेंस एकेडेमी, पुणे आईआरडीएआई और अन्य प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों के साथ अतिथि संकाय के रूप में शिक्षाविदों के साथ घनिष्ठ संबंध रखती हैं। वे विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में बीमा, पुनर्बीमा और जोखिम प्रबंधन विषयों पर वक्ता भी रही हैं और कई बीमा पत्रिकाओं में उनके कई लेख प्रकाशित हुए हैं।

सुश्री भास्कर जीआइसी री साउथ अफ्रीका लिमिटेड, जीआइसी पेरेस्ट्राखोवैनी एलएलसी (रूस) और स्टॉक होल्डिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के बोर्ड में गैर-कार्यकारी निदेशक का पद भी संभालती हैं।

## पदोन्नत उप महाप्रबंधकों को हार्दिक बधाई . . .



श्री संजय वसंत मोकाशी ने वाणिज्य में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद जून 1990 में जीआइसी री में प्रवेश किया। अपने करियर की शुरुआत उन्होंने मानव संसाधन विभाग से की। एक दशक के बाद वे विमानन विभाग से जुड़ गए। वर्ष 2006 में वे जीआइसी री की यूके शाखा की स्थापना में शामिल थे, जहाँ उन्हें

एक साल बाद तैनात किया गया। लंदन में अपने 6 साल के कार्यकाल के दौरान, उन्होंने मुख्य रूप से यूरोप, कैरेबियन द्वीप समूह, ब्राजील, अर्जेंटीना और मैक्सिको से निकलने वाली अग्नि, तेल और ऊर्जा तथा विमानन व्यवसाय से युक्त शाखा के वैकल्पिक पोर्टफोलियो को संभाला।

जीआइसी री मुंबई लौटने पर वे मुख्य प्रबंधक और बाद में विमानन विभाग के सहायक महाप्रबंधक रहे जहाँ उन्होंने जीआइसी री के विश्वव्यापी विमानन और अंतरिक्ष पोर्टफोलियो को संभाला तथा पोर्टफोलियो के लिए पुनर्बीमा सुरक्षा का प्रबंधन किया। अक्टूबर, 2019 में उन्हें जीआइसी री की 100% सहायक कंपनी जीआइसी पेरेस्ट्राखोवैनी एलएलसी के सीईओ के रूप में नियुक्त किया गया।

5 दिसंबर, 2022 से श्री संजय वसंत मोकाशी की उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति हुई।

श्री मुकेश दरमवाला, श्री मुकेश वाघेला तथा श्री साजन वर्गीस उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नत हुए।

● राजभाषा विभाग



श्री मुकेश दरमवाला



श्री मुकेश वाघेला



श्री साजन वर्गीस

## निगम का स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस समारोह

दिनांक 22 नवंबर, 2022 को निगम ने स्थापना के 50 साल पूरे किए। इस अवसर पर कार्यालय परिसर को फूलों, सजावट सामग्री और रौशनी से सजाया गया था। निगम के कार्यपालकों ने कार्मिकों का मार्गदर्शन किया तथा सीएमडी महोदय ने संदेश प्रस्तुत करते हुए सबको बधाई और शुभकामनाएँ दीं।

दिनांक 10 से 12 दिसंबर के दौरान जीआइसी री के सभी कार्मिकों ने अपने परिवार के साथ इस आनंद को कॉर्डेलिया क्लब पर मनाया। इस अवसर पर क्लब पर अधिकारिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ निगम गीत से किया गया। इसके पश्चात् निदेशक एवं महाप्रबंधक सुश्री मधुलिका भास्कर, महाप्रबंधक श्री एन. रामस्वामी, श्री हितेश जोशी, तथा सुश्री जयश्री रानडे ने अपने मंतव्य व्यक्त किए। अंत में निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री देवेश श्रीवास्तव ने निगम की प्रगति पर संतोष जताते हुए इसका श्रेय निगम में कार्यरत सभी कार्मिकों को देते हुए कहा कि हमारी प्रगति तुलन पत्र सबके मिले जुले प्रयासों का ही फल है। उन्होंने निगम की युवा शक्ति से कहा

कि आनेवाले 50 वर्षों की मशाल अब आप सबको अपने हाथों में सुरक्षित रखना होगा और इसकी ज्वाला को और अधिक प्रखर तथा उज्ज्वल बनाना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि हम बाकी की सार्वजनिक कंपनियों से अलग हैं, बेहतर हैं और हम लगातार अपने आप को समय के अनुकूल नए अंदाज़ में बनाए रखने के प्रयास में पूरी तरह सफल हैं और यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

इसके पश्चात् निगम की यात्रा पर आधारित एक वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया तथा जीआइसी के अधिकारियों द्वारा नृत्य प्रस्तुत किए गए जिसका सभी ने बहुत आनंद लिया।

कार्यक्रम का समापन मानव संसाधन विभाग के उप महाप्रबंधक श्री एन.बी. सोनावणे के धन्यवाद ज्ञापन से किया गया।

दो दिन की इस क्लब यात्रा में निगम के कार्मिकों का हर्षोल्लास और जोश चरम सीमा पर रहा जिसे जीआइसीयन्स उम्र भर याद रखेंगे।

● मीनाक्षी डांगी, सहायक प्रबंधक



## विमानन बीमा संगोष्ठी 2022



2018 में आयोजित प्रथम संगोष्ठी की उत्कृष्ट सफलता के बाद, ग्लोबल इन्श्योरन्स ब्रोकर्स द्वारा 14 अक्टूबर 2022 को ताजमहल पैलेस, मुंबई में द्वितीय विमानन बीमा संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी में भारत, लंदन, यूरोप, मध्य पूर्व और सुदूर पूर्व के विभिन्न बीमाकर्ताओं और पुनर्बीमाकर्ताओं के अलावा भारतीय उपमहाद्वीप के एयरलाइन ऑपरेटरों, सामान्य विमानन और बिजनेस जेट ऑपरेटरों, एयरोस्पेस निर्माताओं, रखरखाव से संबंधित हितधारकों साथ ही साथ 'मेंटेनेंस, रिपेयर एंड ऑपरेशन' (एमआरओ), हवाई अड्डे के संचालक, विमानन सेवा प्रदाता, अंतरराष्ट्रीय विमानन पट्टेदार/फाइनेंसर/घरेलू वित्तीय संस्थान, ग्राउंड हैंडलर, साइबर जोखिम विशेषज्ञ, नियामक, विमानन हानि समायोजक, विमानन कानून फर्म, विमानन उद्यमी/स्टार्ट-अप, उद्योग संघ आदि विविध क्षेत्रों से संबंधित 300 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभी क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों के एक आदर्श मिश्रण ने ज्ञान के आदान-प्रदान के स्तर को बढ़ाया और इसे खास बना दिया।

भारत में उड़डयन उद्योग कई गुना बढ़ गया है और संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा घरेलू विमानन बाजार बन गया है। कोविड-19 के कारण चुनौतीपूर्ण समय के बाद, विमानन उद्योग 2022 में सामान्य स्थिति में लौटने की ओर बढ़ रहा है। भारत, एक योगदानकर्ता और उपभोक्ता के रूप में, विश्व स्तर के बुनियादी ढांचे पर अपनी पकड़ मज़बूत कर रहा है। इसके लिए विमानन और एयरोस्पेस विनिर्माण सक्रिय सरकारी पहलों द्वारा समर्थित है तथा अपना सही स्थान हासिल करने का लक्ष्य बना रहा है। एयरलाइंस के अलावा अन्य सहायक सेवाएं जैसे - हवाई अड्डे, एमआरओ, ग्राउंड हैंडलर, कैटरिंग, टेक फर्म भी

भारतीय विमानन उद्योग के विकास में समान रूप से योगदान दे रहे हैं।

2022 एयर इंडिया के निजीकरण के साथ ही भारतीय विमानन के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष है। नई एयरलाइनों के प्रवेश के साथ प्रतिस्पर्धा के तेज होने की उम्मीद के साथ, मौजूदा एयरलाइन ऑपरेटर बदलते परिदृश्य में प्रतिस्पर्धी बने रहने के



लिए अपने बिजनेस मॉडल को फिर से तैयार कर रहे हैं। भारतीय बीमाकर्ता विभिन्न बीमा कवरेज के रूप में विमानन उद्योग को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान कर रहे हैं। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमाकर्ता भारत में विमानन बीमा का बीमालेखन करने के लिए घरेलू बीमा कंपनियों को आवश्यक क्षमता और तकनीकी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। भारतीय विमानन उद्योग के निर्बाध विकास का समर्थन करने तथा साझेदारी के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बीमाकर्ता, पुनर्बीमाकर्ता निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर रूस और यूक्रेन की घटनाओं का भारतीय उपमहाद्वीप में बीमा और पुनर्बीमा उद्योग के प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ा है, साथ ही बीमा मूल्य निर्धारण और कवरेज पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। विमानन उद्योग के हितधारकों और इसके नीति निर्माताओं को एक मंच पर लाकर उनके बीच एक सतत संवाद की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से द्वितीय 'ग्लोबल इन्श्योरेंस ब्रोकर्स एविएशन इन्श्योरेंस सिम्पोजियम 2022' का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में प्रमुख बीमाकर्ताओं, पुनर्बीमाकर्ताओं और उद्योग हितधारकों की साझेदारी रही।





### उद्देश्य :

भारतीय घरेलू बीमा उद्योग अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमाकर्ताओं के सहयोग के माध्यम से उपमहाद्वीप में विमानन उद्योग को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान कर रहा है। उद्योग विभिन्न बीमा समाधानों की पेशकश करने में एक लंबा सफर तय कर चुका है और उभरते जोखिम समाधानों की पेशकश करने के लिए खुद को तैयार कर रहा है।

विमानन और बीमा, दोनों के महत्व को देखते हुए निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ संगोष्ठी का आयोजन किया गया था :

- क्षेत्र के बारे में बीमा समुदायों की समझ बढ़ाना।
- पारस्परिक हित के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए सभी हितधारकों को एक साझा मंच पर एक साथ लाना।
- जोखिम प्रबंधन और सुरक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए।
- उभरते जोखिमों और संभावित समाधानों की पहचान करना और उन पर चर्चा करना।
- निरंतर संवाद और आदान-प्रदान के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय हितधारकों के बीच भारतीय बीमा बाजार की क्षमताओं के बारे में ज्ञान का विस्तार करना।
- भारत में नागरिक उड़डयन और एयरोस्पेस के विकास के समर्थन में बीमा उद्योग के योगदान को उजागर करना।

### संगोष्ठी में नीचे दिये हुए विषयों पर चर्चा हुई :

- भारतीय विमानन; महामारी के बाद - एयरलाइन / एमआरओ / हवाई अड्डे
- एयरलाइंस - विकास, स्थिरता और परिचालन उत्कृष्टता को कैसे प्राप्त करें?
- विमानन बीमा बाजार और भू-राजनीतिक स्थितियाँ -

चुनौतियाँ और अवसर

- नई जोखिम प्रवृत्तियाँ / जलवायु परिवर्तन
- विमानन सुरक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण - रुझान और प्रासंगिकता
- विमानन सुरक्षा: रुझान और खतरे
- वॉक-थ्रू एविएशन इश्योरेंस
- आपातकालीन प्रतिक्रिया - क्या करें और क्या न करें
- एयरोस्पेस उद्योग
- जोखिम प्रबंधन - सामरिक दृष्टिकोण
- बीमा समुदाय के लिए विपणन जोखिम
- विमानन दावा - विमान, यात्री, कार्गो, सामान और तृतीय पक्ष

### संगोष्ठी में नीचे दिये हुए विषयों पर प्रस्तुति हुई :

1. विश्व और भारत में विनियामक और देयता परिदृश्य का विकास  
- क्रिस स्मिथ, क्लाउड एंड कंपनी एलएलपी में सीनियर एसोसिएट (ऑस्ट्रेलियाई)
2. आपातकालीन प्रतिक्रिया - क्या आप तैयार हैं?  
- अनीता क्यू - विमानन प्रमुख, एशिया - केनेडीज़
3. विमानन और चरम मौसम  
- मैकलेरेंस
4. अधिक पहुँच, अधिक विस्तार : अमेरिकी न्यायालय विदेशी संस्थाओं पर व्यक्तिगत अधिकार क्षेत्र कैसे प्राप्त करते हैं?
5. वायुमंडलीय विक्षोभ घटनाएँ - एयरलाइनों के लिए संभावित देयता जोखिम  
- केट सीटन, जेम्स जॉर्डन - साझेदार
6. अन्य विमान अवधारणाएँ  
- चार्ल्स टेलर एविएशन (सीटीए)
7. गणित के माध्यम से विमानन सुरक्षा  
- पी. एस. गणपति - वरिष्ठ विमानन सलाहकार
8. हेलीकॉप्टर चिकित्सा सेवाएँ: एक नए बीमा उत्पाद को ट्रिगर करना  
- आदित्य शर्मा | व्यवसाय विकास प्रमुख, एयरबस
9. भारतीय विमानन बीमा बाजार अवलोकन  
- हितेश जोशी - जीआइसी सी

संगोष्ठी में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। 'विमानन बीमा संगोष्ठी 2022' सभी सहभागियों के प्रयासों से सफलतापूर्ण संपन्न हुई।

● सचिंद्र साळवी, उप महाप्रबंधक

## 18वां बीमा शिखर सम्मेलन



## 18वां बीमा शिखर सम्मेलन

राष्ट्रीय बीमा अकादमी ने 18वें बीमा शिखर सम्मेलन का आयोजन 10 अक्टूबर, 2022 को होटल ट्राइडेंट, नरीमन पॉइंट, मुंबई में किया। इस सम्मेलन का विषय था - क्षितिज का फैलाव : पूर्ण बीमित भारत की ओर बढ़ाव।

भारतीय अर्थव्यवस्था के 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के बाजार की ओर बढ़ने का अनुमान लगाया गया है। वैश्विक औसत 7.2% की तुलना में भारत में बीमा पैठ अभी भी लगभग 4.2% है। महामारी और जलवायु परिवर्तन सहित बदलते जोखिमों के परिदृश्य में बीमा विस्तार करना आवश्यक हो गया है। चुनौतियों के साथ-साथ आगे बढ़ने के अवसर और पूरी तरह से बीमित भारत सुनिश्चित करने के लिए रणनीति विकसित करने के लिए कदम उठाने होंगे।

बीमा क्षेत्र का विस्तार करने के लिए नए क्षेत्रों में विविधता लाना, आगे बढ़ने के लिए पारंपरिक वितरण चैनल के अलावा दूसरे विकल्पों की तलाश करते हुए सर्वव्यापी वितरण, बढ़ी हुई ग्राहक अपेक्षाओं को पूरा करना और उनका डिजिटल नवाचार के माध्यम से बेहतर जागरूकता करना होगा। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण पहल कर रहा है और वर्ष 2027 तक बीमा पैठ को दुगुना करने की रणनीति है। इसके लिए बड़े बदलावों की आवश्यकता है, जो उचित भी है।

यह सम्मेलन भी इन्हीं प्रयासों की एक कड़ी है। इस सम्मलेन में रणनीतिक दृष्टिकोण, नीतिगत मुद्दों, परिचालन और डिजिटल विकल्पों पर चर्चा हुई। बीमा पैठ और व्यापार विकास में सुधार के लिए विचार-विमर्श किया गया। बीमाकर्ताओं को सक्षम करने के लिए नए दृष्टिकोण, व्यवसाय और वितरण मॉडल के बारे में चर्चा की गयी जो उनको लक्ष्यों से आगे बढ़ने और पूरी तरह से बीमित भारत सुनिश्चित करने के लिए मददगार साबित हो।

### बीमा शिखर सम्मेलन के प्रमुख बिन्दु :

बीमा शिखर सम्मेलन 'राष्ट्रीय बीमा अकादमी' का प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम है। राष्ट्रीय बीमा अकादमी, जिसे एनआईए के नाम से जाना जाता है, की स्थापना वर्ष 1980 में वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनियों द्वारा की गई थी। एनआईए बीमा, पेंशन और संबद्ध क्षेत्रों में अनुसंधान हेतु उत्कृष्ट वैश्विक संस्थान है। इसके द्वारा

आयोजित बीमा शिखर सम्मेलन बीमा उद्योग का बहुप्रतीक्षित कार्यक्रम माना जाता है, जहां बीमा से संबंधित समकालीन आयामों का विश्लेषण किया जाता है। बीमा सम्मेलन नवाचार संबंधित विचार-विमर्श के लिए प्रसिद्ध है। यह बीमा उद्योग के दिग्गजों के एक सम्मानित पैनल से सज्जित होता है। यह कार्यक्रम 2005 से हर साल आयोजित किया जा रहा है।

इस वर्ष के कार्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को शामिल किया गया -

- 2007 से बीमा: भारत में बीमा पैठ में तेजी लाने के लिए रणनीतियाँ
- नए नजरिये से देखना: उपभोक्ता केंद्रितता की ओर बढ़ना
- डिजिटलीकरण के नए युग में बढ़ना: अवसर और चुनौतियाँ

सम्मेलन के पैनल में निम्नलिखित सहभागी थे -

- श्री सत्यजीत त्रिपाठी, सीएमडी, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी
- श्री रितेश कुमार, प्रबंध निदेशक और सीईओ, एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी.
- श्री एन. एस. कन्नन, सीईओ, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कंपनी.
- श्री मयंक बथवाल, सीईओ, आदित्य बिड़ला हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- श्री संजय केडिया, कंट्री हेड और सीईओ, मार्श इंडिया इंश्योरेंस ब्रोकर्स प्रा. लिमिटेड

इस शिखर सम्मेलन की शुरुआत श्री जी. श्रीनिवासन ने किया उद्घाटन भाषण से की। जीआईसी री के सीएमडी, श्री देवेश श्रीवास्तव ने शिखर सम्मेलन के दौरान एक विशेष संबोधन दिया। उन्होंने कहा कि बीमा क्षेत्र के पास भारतीय बाजार में विस्तार के लिए ढेर सारे अवसर हैं। भारत भी अन्य विकसित देशों के समान पूर्ण बीमाकृत की स्थिति प्राप्त कर सकता है, हालांकि यात्रा बहुत आसान नहीं होगी। वर्तमान में जीवन बीमा क्षेत्र में हमारी पैठ लगभग 3% है और गैर-जीवन बीमा में 1% है। बीमा बाजार की वृद्धि को सरकार की पहल, अनुकूल विनियामक वातावरण, मजबूत लोकतांत्रिक कारक, जीवंत वितरण चैनल, उत्पाद नवाचार, बढ़ी हुई साझेदारी द्वारा मजबूत किया

जा रहा है। पूरी तरह से बीमित भारत को एक वास्तविकता बनाने के लिए सभी हितधारकों को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने बताया कि निम्नलिखित कारक बेहतर बीमा बाजार प्राप्त करने में सहायक रहेंगे -

1. अनुकूल जनसांख्यिकीय कारक जहां हमारे पास विशाल कार्यशील जनसंख्या है।
2. व्यापक मध्यम वर्ग का विस्तार जो बीमा उत्पादों की मांग को बढ़ाएगा
3. महामारी ने बीमा के प्रति जागरूकता बनाई है, इसमें भी विशेष रूप से सुरक्षा उत्पादों और स्वास्थ्य उत्पादों के प्रति रुझान बना है।

उपरोक्त के अलावा अब डिजिटल और पारंपरिक दोनों माध्यमों से बीमा उत्पादों के लिए बाजार में मांग बढ़ रही है। भारत आर्थिक क्षेत्र में बड़ी छलांग लगाने के लिए तैयार है। प्रौद्योगिकी आधारित उभरते हुए क्षेत्रों में सर्जित अवसरों का लाभ उठाने के लिए डिजिटल और वित्तीय बुनियादी ढांचे को मजबूत करना ज़रूरी है। इससे हमारे बीमा उद्योग को अपने दायरे से बाहर निकल कर वैश्विक प्रचलनों और मांग में शामिल होने में मदद मिलेगी। बढ़ती मांग और बढ़ती अतिरिक्त आय से जीवन और स्वास्थ्य क्षेत्र में पैठ बढ़ेगी।

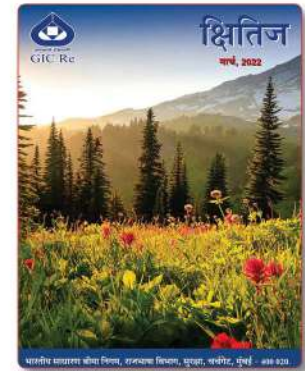
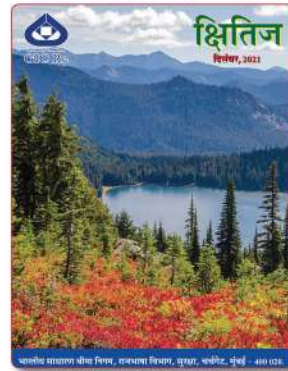
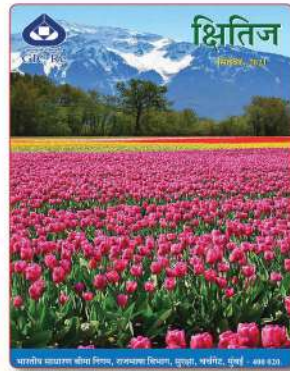
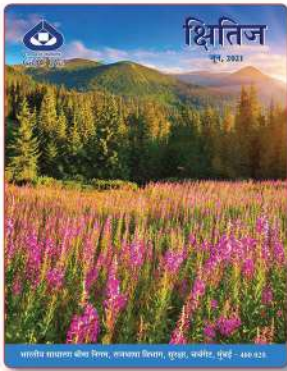
श्री देबाशीष पांडा, बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष इस शिखर सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को प्रस्तुत किया। जैसे 2047 तक सभी के लिए बीमा उपलब्ध कराते हुए एक 'पूर्ण बीमाकृत भारत' की राह सुनिश्चित करना है। सरकार का उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके जीवन स्वास्थ्य और संपत्ति के लिए बीमा कवर दिया जाए। यह महसूस किया गया है कि आगे चलकर प्रत्येक व्यवसाय के पास पर्याप्त बीमा होना चाहिए। बीमा को व्यापक करने के लिए नवाचार, तकनीकी समाधान और जागरूकता है जो भारतीय उप-महाद्वीप में मौजूद विशाल जनसांख्यिकीय लाभांश तक बीमा की पहुंच बढ़ा सकते हैं। इसके लिए सबसे खास ध्यान यह रखा जाना चाहिए कि पॉलिसी धारक के हितों की सुरक्षा के साथ समझौता नहीं किया जाना चाहिए। हर कंपनी के पास एक मजबूत शिकायत प्रबंधन प्रणाली होनी चाहिए। भारत अब एक डिजिटल देश है, जहां हमारी आधी से ज्यादा आबादी की इंटरनेट प्लेटफॉर्म तक पहुंच है। हमें उपभोक्ताओं की संतुष्टि के लिए डिजिटल स्पेस

का उपयोग करना चाहिए और कुशल और प्रभावी बीमा सेवा का लाभ उठाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कुछ बीमा कार्यक्रमों की शुरुआत इसी उद्देश्य से की है कि बीमा पैठ में तेजी लाई जा सके और हमारे समाज के सबसे निचले तबके के नागरिकों तक बीमा सेवा पहुंच सके। भारत बहुत जल्द चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। क्षमता के संदर्भ में हमारे पास स्थिर अर्थव्यवस्था, जनसांख्यिकीय लाभांश, बढ़ता आय स्तर, शहरी और ग्रामीण बाजार नियामक समर्थन है और इस प्रकार यह सुनिश्चित करने का सुनहरा अवसर है कि बीमा बाजार की वृद्धि हो।

श्री सौरभ मिश्रा, संयुक्त सचिव, वित्तीय सेवा विभाग (वित्त मंत्रालय) ने बीमा उत्पादों की पहुंच और सामर्थ्य पर ध्यान दिलाते हुए कहा कि सरकार ने पिछले कुछ वर्षों से पूरे भारत में बीमा उत्पादों की अधिक पैठ सुनिश्चित करने के लिए कई पहल की हैं। सरकार ने 'जीवन ज्योति बीमा योजना' और 'सुरक्षा बीमा योजना' शुरू की थी। इसके लिए क्रमशः 29.7 करोड़ और 14.00 करोड़ से अधिक की नीतियां जारी की गई हैं। इनके अलावा 'जन आरोग्य योजना' ने 70 करोड़ से अधिक का आंकड़ा हासिल किया है। यह भारत के लोगों का इन उत्पादों में निहित विश्वास और जागरूकता को इंगित करता है। भारत में बैंकिंग नेटवर्क बहुत व्यापक रूप से फैला हुआ है जो बीमा के लिए आधारभूत संरचना का काम कर सकता है। इसके माध्यम से किसी तरह बीमा पैठ को बढ़ाया जा सकता है। बीमा का अर्थ एक ऐसा उपकरण है जो किसी व्यक्ति की संपत्ति, जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा करता है। यह अनिश्चित जोखिम के लिए किया गया अग्रिम निवेश है। अतः जब बीमा कंपनियाँ उपभोक्ताओं को सुविधा प्रदान करेंगी तभी बीमा पैठ को 1% से 5% तक बढ़ाया जा सकता है। हमारे पास भारत में साधारण और जीवन दोनों पक्षों के सभी बीमा उत्पादों में एक बुनियादी साइबर सुरक्षा होनी चाहिए। एक बार जब हम इसे हासिल कर लेते हैं तो डिजिटल यात्रा और नवीन उत्पाद 'पूर्ण बीमाकृत भारत' के सपने को हासिल करने में मदद करेंगे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बीमा प्रणाली अगले कुछ वर्षों में और विकसित होगी। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करने के लिए बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण कई कदम उठा रहा है जिसमें वर्ष 2027 तक बीमा पैठ को दोगुना करना प्रमुख योजना है।

● जयश्री प्रभू, सहायक महाप्रबंधक

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में  
भारतीय साधारण बीमा निगम (जीआइसी री) को दो पुरस्कार



निगम के लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मुंबई स्थित 62 पब्लिक सेक्टर कार्यालयों के लिए 'राजभाषा विभाग क्लब' के रूप में स्थापित 'मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' की ओर से आयोजित वर्चुअल बैठक तथा पुरस्कार वितरण समारोह में निगम में चल रहे राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

इसी के साथ जीआइसी री की हिन्दी गृहपत्रिका 'क्षितिज' को भी उत्तम प्रकाशन के लिए पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार वर्ष 2021-22 के दौरान प्रकाशित क्षितिज के 4 तिमाही अंकों के लिए प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि हमारी इस गृहपत्रिका को विगत कई वर्षों से निरंतर पुरस्कार प्राप्त हो रहा है।

वर्चुअल रूप से प्रदत्त इस पुरस्कार को प्राप्त करने के बाद इस उपलब्धि का उल्लास मनाने के लिए इस शील्ड को प्रत्यक्ष रूप से निगम के कार्यपालकों के साथ शेयर किया गया।

'क्षितिज' पत्रिका को इस स्तर पर पहुंचाने के लिए जीआइसी के मार्गदर्शक कार्यपालकों, संपादन समिति के सदस्यों, लेखकों एवं राजभाषा कार्यान्वयन को उत्कृष्ट बनाने के लिए निगम में कार्यरत सभी सदस्यों को धन्यवाद तथा हार्दिक बधाई।

● जयश्री डहाळे, उप प्रबंधक

## भारतीय साधारण बीमा निगम - 50वीं वार्षिक आम बैठक

भारतीय साधारण बीमा निगम की 50 वीं वार्षिक आम बैठक (एजीएम) विडियो कॉन्फ्रेंस / अन्य ऑडिओ विडिओ माध्यमों के द्वारा सोमवार 26 सितंबर 2022 को दोपहर 3.00 बजे आयोजित की गयी थी जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार विमर्श किया गया।

1. 31 मार्च 2022 को समाप्त निगम के लेखापरीक्षित वित्तीय वर्ष के लिये वित्तीय विवरण (एकल एवं समेकीत) और उस पर निदेशक मंडल एवं लेखापरीक्षकों की प्राप्त रिपोर्ट पर विचार करना एवं अंगीकार करना।

2. वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिये भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) द्वारा नियुक्त संयुक्त सांविधिक लेखापरीक्षकों का परिश्रमिक निर्धारित करने के लिये निदेशक मंडल को प्राधिकृत करना।

बैठक की शुरुआत ठीक 3 बजे हुई। बैठक के अध्यक्ष श्री देवेश श्रीवास्तव जी ने बैठक में हिस्सा लेने वाले सभी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने कंपनी सचिव को बैठक की रूपरेखा से सबको अवगत करने का निर्देश दिया।

कंपनी सचिव श्री सतीश कुमार ने विडिओ कॉन्फ्रेंस द्वारा बैठक कैसे आयोजित की जाएगी उसकी जानकारी सभी को दी।

अध्यक्ष महोदय ने फिर उन सभी सदस्यों को वोट करने के लिए कहा जिन्होंने बैठक से संबंधित विषयों पर वोट नहीं किया था। कंपनी सचिव ने अध्यक्ष महोदय को अवगत कराया कि बैठक के लिए आवश्यक सदस्य बैठक में उपस्थित हैं।

अध्यक्ष महोदय के अनुरोध पर बैठक में उपस्थित निदेशक मंडल, महाप्रबंधक मुख्य सतर्कता अधिकारी तथा नियुक्त एक्ज्यूअरी ने अपना परिचय दिया।

अध्यक्ष महोदय ने जानकारी दी कि बैठक में श्रीमती जयश्री बालकृष्ण, मुख्य जोखिम अधिकारी और श्री सतीश कुमार कंपनी सचिव, सांविधिक लेखापरीक्षकगण और सचिवीय लेखापरीक्षक भी उपस्थित हैं।

अध्यक्ष महोदय ने कंपनी सचिव से रेग्युलेटरी प्रोव्हिजन्स के बारे में सभी को अवगत कराने का अनुरोध किया। कंपनी सचिव ने बताया कि वित्तीय परिणाम, निदेशक मंडल की रिपोर्ट तथा लेखापरीक्षकों की रिपोर्ट परीक्षण के लिए उपलब्ध है।

उसके बाद अध्यक्ष महोदय ने अपना अध्यक्षीय भाषण दिया। अध्यक्षीय भाषण का सार निम्नवत है :

देश की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के उत्सव के साथ आयोजित हो रहे एक अतिविशिष्ट महत्वपूर्ण कार्यक्रम - आपकी कंपनी की स्वर्ण जयंती वार्षिक आम बैठक में आपका स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। आजादी के इस अमृत महोत्सव

में हम एक पल उन बलिदानों को याद करें, जिन्होंने हमें इस महान लोकतंत्र का नागरिक बनना संभव बनाया। नियति के साथ हमारे प्रयास को सही मायने में अभिव्यक्ति मिली है क्योंकि हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

जबरदस्त प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में हमारे नागरिकों का होसला और दृढ़ता बड़े गर्व की बात है। हर क्षेत्र में - चाहे वह अर्थव्यवस्था हो, विज्ञान और प्रौद्योगिकी हो या कृषि हो, हम विश्व रैंकिंग में लगातार आगे बढ़ रहे हैं। मैं विशेष रूप से अपने उन महान खिलाड़ियों को बधाई देना अपना अतुल्य सौभाग्य मानता हूँ, जिन्होंने राष्ट्र समूह में एक बार फिर हमारा सिर ऊंचा किया है।

पिछले कुछ वर्ष उतने ही असाधारण रहे हैं जितने कि वे संपूर्ण मानव जाति के लिए दुखद रहे हैं। एक अति सूक्ष्मदर्शी कारक द्वारा मानवता के समक्ष रखी गई बड़ी चुनौतियों ने हम पर सामूहिक जिम्मेदारी डाल दी। हम जानते हैं कि हमारे पास हमारे जीवन को प्रभावित करनेवाले तीव्र और अप्रत्याशित हमले तथा वैश्विक महामारी से निपटने की कोई मूल योजना नहीं है। रूस-यूक्रेन संघर्ष की समाप्ति के कोई संकेत नहीं दिखाई देने से भू-राजनीतिक तनाव लगातार बढ़ रहा है। खाद्य असुरक्षा, मुद्रास्फीति और जलवायु संबंधी चिंताएं बढ़ रही हैं। इस प्रकार (पुनः) बीमा सहित वैश्विक वित्तीय बाजार चुनौती से जूझ रहे हैं।

हालांकि, इन व्यापक आर्थिक और भू-राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद, भारत ने अपनी उर्ध्वगामी प्रगति जारी रखी है। सामूहिक लचीलेपन और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता ने एक बार फिर राह दिखाई है। पिछले वर्ष के दौरान महामारी का खामियाजा भुगत चुकी अर्थव्यवस्था का आर्थिक उत्पादन के संकुचन से उबरना, आशा की एक किरण है। आपकी कंपनी ने भी आर्थिक विकास और सुधार में भाग लिया है - हमने असमानांतर बाधाओं के होते हुए भी अच्छा प्रदर्शन करने का प्रयास किया है।

अपनी कंपनी की स्वर्ण जयंती ऐसे उत्साह के साथ मनाई जा रही है, जैसा कि ऐसे शानदार मौके पर अपेक्षित है। हम सबको इस अतुल्य यात्रा में भागीदारी करने का सौभाग्य मिला है। अपने संस्थापकों और नेताओं की दूरदृष्टि, उद्यमशीलता की भावना और प्रतिबद्धता का उत्सव मनाते हुए, इस अवसर पर हम उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनके चार्टर को आगे बढ़ाने के लिए हम वास्तव में आशांचित हैं और हम इस महान वित्तीय संस्थान को देश के आर्थिक विकास सूचकांक में सबसे अग्रणी रखने के लिए उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों को आगे बढ़ाने में सक्षम हैं।

## भविष्य के प्रति दृष्टिकोण

महामारी और भू-राजनीतिक संकट और वैश्विक व्यवसाय पर इसके प्रभाव के कारण वर्ष 2022 के दौरान भारतीय बीमा उद्योग के अच्छी प्रगति करने का अनुमान है। विनिर्माण, व्यापार, होटल, परिवहन और वित्त सहित बीमा, रियल एस्टेट और व्यावसायिक सेवाओं जैसे क्षेत्रों में प्रदर्शन सुस्त रहा है, लेकिन अंतिम तिमाही में इसमें तेजी आई है। ठोस बुनियादी बातों के आधार पर, कोई व्यक्ति फिर से उछाल के बारे में आशावादी हो सकता है और उत्साहजनक रुझान (विशेष रूप से सेवा क्षेत्रों का सशक्त पुनरुद्धार) बेहद सकारात्मक दृष्टिकोण को इंगित करते हैं।

हम आशा करते हैं कि दीर्घ काल में, भारत में बीमा बाजार का विस्तार जारी रहेगा और भारतीय अर्थव्यवस्था की निरंतर वृद्धि के अनुरूप बीमा पैठ और बीमा घनत्व में वृद्धि जारी रहेगी। विशाल युवा बीमा योग्य आबादी, एक प्रगतिशील और जीवंत मध्यम वर्ग जैसे जनसांख्यिकीय कारक, और सुरक्षा और सेवानिवृत्ति योजना की आवश्यकता के बारे में बढ़ती जागरूकता बीमा क्षेत्र में इस प्रगति में सहयोग करेगी। तदनुसार, हम उम्मीद करते हैं कि भारतीय पुनर्बीमा बाजार में यह वृद्धि परिलक्षित होगी।

सामान्य बीमा के मोर्चे पर एक बार फिर मोटर और स्वास्थ्य पोर्टफोलियो पर जोर दिए जाने की संभावना है। रियल्टी, राजमार्ग, नए हवाई अड्डों, बिजली संयंत्र और अन्य बड़ी परियोजनाओं सहित बुनियादी ढांचा क्षेत्र पर ध्यान देना जारी रहेगा। इन सबमें एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने और संपत्ति लाइनों को बढ़ावा देने की संभावना है। समग्र परिदृश्य सशक्त विकास को इंगित करता है और जीआइसी री अपनी घरेलू उपस्थिति को सशक्त बनाने, अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपने कारोबारी अंश का विस्तार करने का प्रयास करेगा और विकसित बाजारों में सुरक्षित पुनर्बीमा की मांग को भुनाने के लिए खुद की मौजूदगी बनाए रखना जारी रखेगा।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी कंपनी भारतीय और विश्व बीमा उद्योग को सहयोग करने के लिए पूरी तरह से तैयार और सक्रिय है और भविष्य में हामीदारी अधिशेष प्राप्त करने पर ध्यान देना जारी रखेगी। आने वाले वर्षों में हमारा ध्यान लाभदायक विविध विकास पर होगा।

इस अवसर पर मैं अपने क्लाइंट्स, मध्यस्थों, कर्मचारियों और बोर्ड के अपने सहयोगी सदस्यों को अस्थिर समय के दौरान कंपनी का मार्गदर्शन करने में उनके अमूल्य समर्थन के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।

हम पर विश्वास जताने के लिए मैं हमारे सभी शेयरधारकों को विशेष धन्यवाद देता हूँ। आप ताकत के एक अमूल्य स्तंभ बने हुए हैं और मैं उत्कृष्टता के उच्च स्तर को प्राप्त करने की हमारी यात्रा में आपके निरंतर समर्थन की आशा करता हूँ।

तत्पश्चात श्रीमती ए मणिमेखलाई को कंपनी के निदेशक मंडल में शामिल करने का प्रस्ताव भी मंजूर हुआ।

उसके बाद कंपनी सचिव ने प्रश्नोत्तर की शुरुआत की। कुछ शेयर धारकों ने प्रश्न पूछने के लिये अपने नाम दिये थे। कुछ शेयर धारकों ने कंपनी के वित्तीय कारोबार की प्रशंसा की। कुछ सदस्यों ने विडिओ कॉन्फरन्सिंग के बजाय व्यक्तिगत रूप से बैठक की उपस्थित रहने की मांग की।

बैठक में कुल 73 सदस्य उपस्थित थे। भारत सरकार की तरफ से अपर सचिव उपस्थित थे। बैठक में प्रस्तावित सभी 3 प्रस्ताव पारित हुए।

सभी उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापन देने के बाद बैठक 04.10 बजे समाप्त हुई।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान वित्तीय परिणाम निम्नानुसार हैं

विवरण	2021-22	2020-21
1. सकल प्रीमियम	43,208.46	47,014.38
2. निवल प्रीमियम	38,799.03	42,197.50
3. निवल अर्जित प्रीमियम	39,293.40	39,865.89
4. अर्जित प्रीमियम से निवल उपगत दावों का %	36,625.85	
93.21%	36,853.75	
92.40%		
5. अर्जित प्रीमियम से निवल कमीशन का %	6,950.82	
17.69%	7,984.39	
20.00%		
6. अन्य आय घटाकर परिचालन व्यय और अन्य निर्गम	(30.13)	480.90
7. व्यय को घटाकर राजस्व के अनुपात में निवेश आय	7,362.75	6,824.20
8. प्रीमियम न्यूनता	12.98	35.30
9. कुल लाभ/हानि (-) (3+7-4-5-6-8)	3,096.64	1,335.75
10. ब्याज, लाभांश और किराया (निवल) और निवेशों की बिक्री पर लाभ	2,199.53	1,996.66
11. अन्य निर्गम घटाकर अन्य आय	90.41	(117.46)

12. रिटन ऑफ निवेशों के परिशोधन और रिटन ऑफ निवेशों के मूल्य में कमी सहित संदिग्ध ऋणों और निवेशों के लिए रिज़र्व	1,826.45	51.57
13. कर पूर्व लाभ (9+10+11-12)	3,560.14	3,163.38
14. आस्थगित करों सहित कर हेतु प्रावधान	1,554.40	1,242.94
15. कर पश्चात लाभ (13-14)	2,005.74	1,920.44

(निवल अर्जित प्रीमियम असमाप्त जोखिमों के लिए रिज़र्व के समायोजन के बाद प्राप्त होता है)

(प्रतिशत संबंधित वर्ष के निवल अर्जित प्रीमियम से संबंधित है)

(आईआरडीएआई/एनएल/आरआई/41/2012-13 दिनांक 3 मार्च

2013 के माध्यम से घरेलू बीमा कंपनियों से अनिवार्य सत्र 01.04.13 से 10% से घटाकर 5% कर दिया गया और आगे आईआरडीए/आरआई/1/180/2022 दिनांक 10.01.2022 के माध्यम से 01.04.2022 से 5% से घटाकर 4% कर दिया गया है)

(निवल अर्जित प्रीमियम असमाप्त जोखिमों के लिए रिज़र्व के समायोजन के बाद प्राप्त होता है)

(प्रतिशत संबंधित वर्ष के निवल अर्जित प्रीमियम से संबंधित है)

(आईआरडीएआई/एनएल/आरआई/41/2012-13 दिनांक 3 मार्च 2013 के माध्यम से घरेलू बीमा कंपनियों से अनिवार्य सत्र 01.04.13 से 10% से घटाकर 5% कर दिया गया और आगे आईआरडीए/आरआई/1/180/2022 दिनांक 10.01.2022 के माध्यम से 01.04.2022 से 5% से घटाकर 4% कर दिया गया है)

● सचिंद्र साळवी, उप महाप्रबंधक

## सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय पुनर्बीमा सम्मेलन (एसआइआरसी) 2022



सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय पुनर्बीमा सम्मेलन को 1991 में बीमा पेशेवरों को एक मंच प्रदान करने के लिए आरंभ किया गया था ताकि वे पुनर्बीमा बाजार में विकास का जायजा लेते हुए मुद्दों पर चर्चा कर सकें। एक और मकसद था; अगले वर्ष की संधि के नवीनीकरण की तैयारी शुरू करना।

वार्षिक रूप में आयोजित इस सम्मेलन में विश्व भर के पुनर्बीमाकर्ता, बीमाकर्ता और पुनर्बीमा ब्रोकर्स अर्थात् 1,000 से अधिक पंजीकृत प्रतिनिधि शामिल होते हैं और मुख्य सम्मेलन के साथ द्विपक्षीय चर्चाओं का संचालन करते हैं।

इस वर्ष इसका आयोजन 31 अक्टूबर से 3 नवंबर, 2022 तक सिंगापुर के 'मरीना बे सैंड्स एक्सपो एंड कन्वेंशन सेंटर' में किया गया। इस सम्मेलन में देश विदेश के साधारण 2200

से अधिक प्रतिनिधि शामिल रहे।

जीआइसी की तरफ से इस सम्मेलन में अध्यक्ष, श्री देवेश श्रीवास्तव, महाप्रबंधक सुश्री मधुलिका भास्कर, सुश्री जयश्री रानडे, श्री हितेश जोशी, उप महाप्रबंधक श्री राजेश पवार, (मलेशिया शाखा), श्री राजेश खडतरे, श्री सेविओ फर्नांडिस, श्री एस.के. रथ, श्री सचिंद्र साळवी, सुश्री मोधा पुजारी तथा श्री सुंदर सिंह (मलेशिया शाखा) शामिल रहे।

इस सम्मेलन का घोषवाक्य 'रीकनेक्टिंग रीशोपिंग द फ्यूचर' था।

दिनांक 31.10.2022 को शाम 4 बजे सम्मेलन प्रारंभ हुआ। स्वागत भाषण श्री मार्क हॉसोफेर, एस. आर. ए. अध्यक्ष ने किया। श्री एल्विन टयान, राज्य मंत्री, व्यापार और उद्योग मंत्रालय और संस्कृति समुदाय और युवा मंत्रालय ने आधिकारिक मुख्य भाषण प्रस्तुत किया।





दिनांक 31.10.2022 को 4.30 बजे सम्मेलन के विषय पर चर्चासत्र हुआ जिसमें श्री क्रिस टाउनसेंड-बोर्ड मेंबर, एलायंज, श्री डेविड प्राइब, अध्यक्ष, गाय कारपेंटर, श्री इयान पारकर, ग्रुप सीइओ, काटलीना शामिल थे. इस चर्चा सत्र का सूत्र संचालन श्री विंस्टन नेस्फील्ड, पी. डब्ल्यू. सी. ने किया.

दिनांक 1.11.2022 को सुबह 10 बजे 'वैश्विक मुद्रास्फीति: पुनर्बीमा उद्योग के लिए निहितार्थ' इस विषय पर चर्चासत्र हुआ जिसमें डॉ. मायकेल मेंहार्ट- ग्लोबल चीफ इकोनॉमिस्ट, म्युनिख री, श्री मैथ्यू रोज, कैपिटल सोल्यूशन्स एंड लाइफ के प्रमुख, एशिया, गाइ कारपेंटर, मिस रेचल तर्क, ग्रुप हेड ऑफ स्ट्रेटेजी, बीजले, श्री जॉन झु, चीफ इकोनॉमिस्ट एशिया, स्विस् री शामिल थे. इस चर्चा सत्र का सूत्रसंचालन डॉ कई उवे स्वेंज़, डिप्टी एम. डि. तथा हेड ऑफ रिसर्च और फोरसाईट, दि जिनेवा एसोसिएशन ने किया.

दिनांक 1.11.2022 को दोपहर 2.30 बजे एक और चर्चा सत्र आरंभ हुआ जिसका विषय था 'पुनर्बीमा में लैंगिक समानता के अंतर को पाटना' जिसमें मिस एमिको माकी, निदेशक जापान इन्श्योरेंस, मिस शिल्पा पंकज, हेड ऑफ एग्रीकल्चर, गाइ कारपेंटर, श्री रोबर्ट रिहा, हेड ऑफ क्लेम्स, अक्सा, मिस तै हुई येन, रीजनल डायरेक्टर, गालेघेर री, शामिल थे. इस चर्चासत्र का सूत्रसंचालन मिस मेलिसा हयाक, ब्रॉडकास्ट जर्नलिस्ट ने किया.

2.11.2022 को सुबह 10 बजे 'दि ट्रांजिशन टू नेट जीरो -

कमिटमेंट ऑर लिप सर्विस' तथा दोपहर 2.30 बजे 'दि फ्यूचर ऑफ वर्क लीडिंग थे मल्टी जेनेरेशन वर्कफोर्स' विषय पर चर्चासत्र हुआ.

3.11.2022 को सुबह 10 बजे 'अचीविंग सस्टेनेबल फूड सेक्युरिटी इन एशिया एमिड क्लाइमेट थ्रीट्स' इस विषय पर चर्चा सत्र हुआ.

इस सम्मेलन में विश्व की लगभग सभी पुनर्बीमा कम्पनियां, जैसे म्युनिख री, स्विस् री, तोवा री, पार्टनर री, बर्कशायर हाथवे, लॉयड्स, अफ्रीकन री, एलियांज री, एऑन री, हनोवर री, मलेशिया री, मैफ री, स्कोर री, सिंगापुर री, सैमसंग री, सऊदी री, हिमालयन री, इत्यादि मौजूद थे. कई बीमा कम्पनियां जैसे न्यू इंडिया एश्योरेन्स, नेशनल इन्श्युरन्स, ब्रोकर्स - मार्श, गाय कारपेंटर, एऑन, इंटरलिंग, जे. बी. बोडा, के एम. दस्तूर इत्यादि भी शामिल थे. इसके अलावा विश्व भर के ब्रोकर्स यहां चर्चा के लिए उपलब्ध थे.

जीआइसी के अधिकारियों की भी बीमा तथा पुनर्बीमा कंपनियों के साथ चर्चा हुई. खास करके आने वाले वर्ष 2023 में रिन्यूवल कैसे रहेंगे, प्रीमियम कितना बढ़ सकता है, इन विषयों पर चर्चा हुई.

सिंगापुर अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमा सम्मेलन सभी प्रतिभागियों को काफी महत्वपूर्ण होता है.

● सचिंद्र साळवी, उप महाप्रबंधक

### मलेशिया शाखा में निगम के स्थापना दिवस का स्वर्ण जयंती समारोह



● जीआइसी री लबुआन शाखा के सीईओ श्री राजेश पवार एवं अन्य अधिकारीगण

## नई दिल्ली संपर्क कार्यालय हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2022 - एक रिपोर्ट

भारतीय साधारण बीमा निगम, नई दिल्ली द्वारा 16 सितम्बर से 22 सितम्बर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया. दिनांक 18.10.2022 को पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता ऑनलाइन रूप से मुख्य प्रबंधक अपर्णा सिन्हा ने की. उन्होंने सभी को हिंदी दिवस की बधाई दी. हिंदी पखवाड़े के दौरान हस्ताक्षर प्रतियोगिता, हिंदी शब्द वर्ग पहेली, कहानी लेखन, पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई. बैठक के दौरान सभी प्रतियोगिताओं के परिणामों की भी घोषणा की गई.

### हस्ताक्षर प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	श्रीमती नीता लखानी
द्वितीय पुरस्कार	श्रीमती अनुराधा पोखरियाल

### हिंदी शब्द वर्ग पहेली

प्रथम पुरस्कार	श्रीमती अनुराधा पोखरियाल
द्वितीय पुरस्कार	श्रीमती नीता लखानी

### कहानी लेखन प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	श्री दीपक मिश्रा
द्वितीय पुरस्कार	श्रीमती अनुराधा पोखरियाल

### पोस्टर प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	श्रीमती अनुश्री आनंद
द्वितीय पुरस्कार	श्री भगोत सिंह

### 'दैनिक कामकाज में हिंदी प्रयोग' पुरस्कार

श्री महेंद्र कुमार
श्री भगोत सिंह

इस कार्यक्रम के दौरान श्री दिनेश चंद ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में विस्तार से बताया तथा राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए उठाये गए कदमों के बारे में बताया. मुख्य प्रबंधक ने सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई देते हुए दिल्ली कार्यालय को सभी प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन के लिए बधाई दी.

मुख्य प्रबंधक ने अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय देकर हमें अभिप्रेरित कर हमारा उत्साहवर्धन किया. धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिंदी समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का संचालन श्रीमती स्वाति सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक एवं दिनेश चंद सहायक प्रबंधक ने किया.

● दिनेश चंद, सहायक प्रबंधक

### झलकियां



## जीआईसी री में हिन्दी पखवाड़ा तथा हिन्दी दिवस समारोह

### हिन्दी पखवाड़ा :

भारतीय साधारण निगम में प्रति वर्ष हिंदी पखवाड़ा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दौरान कार्यालय में कार्यरत विभिन्न अधिकारियों, कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं।

इस वर्ष भी जीआईसी री में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया और इस उपलक्ष्य में 'ऑफलाइन' माध्यम से 5 हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में सभी संवर्गों के लिए 'हिंदी में हस्ताक्षर प्रतियोगिता, हिंदी कहानी तथा हिंदी लेख प्रतियोगिता 'पोस्टर प्रतियोगिता, शब्द-वर्ग पहेली प्रतियोगिता का समावेश था।

एक और प्रतियोगिता 'प्रश्नमंच' का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न विषयों पर आधारित प्रश्न पूछे गए और सही जवाब देने पर तत्काल पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रश्नमंच कार्यक्रम का संचालन राजभाषा विभाग की मुख्य प्रबंधक सुश्री अपर्णा सिन्हा ने किया।

प्रसन्नता का विषय रहा कि दो वर्षों के बाद इस वर्ष ऑफलाइन माध्यम से अपेक्षा से अधिक प्रतिभागियों ने उसमें रुचि लेकर सहभाग किया। पुरस्कृत सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को हिन्दी गृहपत्रिका 'क्षितिज' में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया ताकि अन्य कार्मिक सदस्य भी पढ़कर उससे लाभान्वित हो सकें।

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर निगम में कार्यरत सभी कार्मिकों के हिन्दी के प्रति रुचि तथा जुनून दिखाई दिया। हिन्दी के प्रति इस सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए सभी कार्मिक सराहना और बधाई के पात्र हैं।

### हिंदी दिवस समारोह :

12 अक्टूबर को चर्चगेट स्थित के.सी. कॉलेज के वाटूमल ऑडिटोरियम में 'हिन्दी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण - अधिकारिक कार्यक्रम का संचालन मुख्य प्रबंधक सुश्री अपर्णा सिन्हा ने किया। निगम के सीएमडी महोदय किसी अन्य व्यस्तता के कारण कार्यक्रम के आरंभ में शामिल नहीं हो पाए। हालांकि कुछ देर बाद वे अवश्य कार्यक्रम से जुड़े।

सर्वप्रथम दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का आरंभ किया गया। इस अवसर पर निगम की निदेशक एवं महाप्रबंधक श्रीमती मधुलिका भास्कर, महाप्रबंधक श्री एन. रामस्वामी, श्री हितेश जोशी तथा महाप्रबंधक एवं नियुक्त एक्युअरी श्री सतीश भट उपस्थित रहे।

दीप प्रज्वलन के बाद राजभाषा विभाग के प्रभारी महाप्रबंधक श्री एन. रामस्वामीने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने भाषण में सभी कर्मचारियों को पुनर्बीमा व्यवसाय के साथ-साथ हिन्दी कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अव्वल बने रहने की अपील की और कहा कि हिन्दी भाषा के गौरव को हमेशा बनाए रखें। हिन्दी में काम करने में गौरव का अनुभव करें, और जहां कहीं भी संभव हो, हिन्दी में काम करें। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी के कार्य को केवल हिन्दी पखवाड़े तक सीमित न रखते हुए वर्ष भर बनाए रखें। उन्होंने आगे होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले कलाकारों को अग्रिम तौर पर बधाई और शुभकामनाएं भी दीं।

इसके पश्चात हिंदी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित सभी हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को उपस्थित सभी महाप्रबंधकों ने प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जानेवाली राशि बैंक ट्रांसफर के माध्यम से प्रदान की गई। इसके पश्चात सहायक महाप्रबंधक श्रीमती प्रेरणा पुत्रन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम के प्रथम चरण के बाद चायपान का मध्यांतर रखा गया तथा उसके बाद निगम में कार्यरत कार्मिकों ने अपना प्रतिभा प्रदर्शन करते हुए नृत्य, गीत-संगीत तथा स्वरचित कविताएं प्रस्तुत करते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन किया जिसका आनंद उपस्थित सभी दर्शकों ने लिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का सूत्र संचालन राजभाषा विभाग की उप प्रबंधक श्रीमती जयश्री डहाळे तथा सहायक प्रबंधक सुश्री इंदिरा ने किया।

● जयश्री डहाळे, उप प्रबंधक

हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार



# हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार



सांस्कृतिक कार्यक्रम



सांस्कृतिक कार्यक्रम



## हिंदी कहानी / लेख प्रतियोगिता - प्रथम पुरस्कार

### आज़ादी के बाद प्रगति पथ पर भारत



भारत का अस्तित्व उसके 1.3 अरब नागरिकों की आशाओं, अपेक्षाओं और सपनों पर टिका है, हमें हमारी आज़ादी हज़ारों स्वतंत्रता सेनानियों के प्रयासों और बलिदानों से मिली है। भारत के स्वतंत्रता संघर्षों में 1857 में पहला भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, सत्याग्रह आंदोलन, लोकमान्य तिलक का पूर्ण स्वराज्य का आह्वान, नेताजी के नेतृत्व में आज़ाद हिंद फौज का दिल्ली मार्च और सभी क्षेत्रों में ऐसे प्रेरक क्षण शामिल हैं।

आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत की स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित पहल है। ये महोत्सव उन लोगों के प्रति समर्पित है जिन्होंने भारत की आज तक की सफलता में सक्रिय योगदान किया है। हमारे गणतंत्र की यात्रा में यह एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और अपनी अतीत की उपलब्धियों तथा भविष्य की चुनौतियों पर सोच विचार एवं अंतर्मुख करने का एक अच्छा अवसर है। इसके अंतर्गत देश

के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों का शानदार उत्सव मनाया जा रहा है।

गौरवमयी 75 वर्षों की इस यात्रा में संघर्षों और प्रयासों के साथ 50 खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था की ओर तेज़ी से बढ़ रही आर्थिक महाशक्ति का उल्लेख पूरे विश्व में किया जा रहा है। आज भारत की गिनती विश्व के उभरते महाशक्तियों में की जाती है। क्रय शक्ति की दृष्टि से भारत दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था है।

वह दिन दूर नहीं जब हम अपना प्राचीन गौरव फिर से हासिल करेंगे जब भारत को विश्व गुरु के रूप में जाना जाता था। इस देश में पतंजलि और शंकराचार्य जैसे महान दार्शनिक, चरक और सुश्रुत जैसे चिकित्सक, आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे गणितज्ञ पैदा हुए। इस महान विरासत का जिक्र करते हुए सरदार पटेल ने कहा था, “ यहाँ की मिट्टी में ऐसा कुछ अनोखा है कि इतनी कठिनाइयों की बावजूद यह विभूतियों की धरती रही है।

भारत ने विश्व में अपने आप को सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में विधायिका, शासन, प्रशासन तथा जन-कल्याण में अग्रणी साबित किया है। देशवासियों के जीवन स्तर को ऊपर ले जाने के लिए भारत को तेज़ रफ्तार में विकास करना होगा लेकिन यह विकास सर्वसमावेशी और पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल होना चाहिए।

उम्र के लिहाज़ से 30 साल से कम वय वाले भारत को 'वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहे विश्व' में एक नौजवान देश कहा जा सकता है। इस युवा ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण के रचनात्मक कार्य में लगाना ज़रूरी है।

● अमित दत्ता, उप प्रबंधक

## कहानी लेखन प्रतियोगिता - द्वितीय पुरस्कार

### “मिसाइल मैन - अब्दुल कलाम”



यह कहानी है सुदूर दक्षिण में स्थित रामेश्वरम के एक साधारण परिवार की। 15 अक्टूबर, 1931 को रामेश्वरम में इस परिवार में एक बच्चे का जन्म हुआ। जिसे आज भारत और सम्पूर्ण विश्व में 'मिसाइल मैन' के नाम से जाना जाता है। जी हाँ, यह कहानी है अपने भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम जी की।

कलाम तमिलनाडू के एक बेहद गरीब मुसलमान परिवार में जन्मे थे। पिता जैनुलब्दीन एक नाविक थे, जो कि तीर्थयात्रियों को रामेश्वरम् और धनुषकोडी की यात्रा कराते थे। कलाम अपने भाई बहनों में सबसे छोटे थे।

परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण महज़ दस



वर्ष की आयु में उन्होंने अखबार बांटने का कार्य किया। परंतु यह काम सिर्फ आर्थिक वजह से नहीं किया गया बल्कि एक और वजह, ज्ञानार्जन भी थी। दरअसल वे सुनिश्चित करते थे कि अखबार बांटने से पहले वह उसे पूरा पढ़ ले। विद्यालयीन जीवन में ही उनकी बुद्धिमत्ता ने शिक्षकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया था।

उनका मानना था कि अगर सूरज की तरह चमकना है, तो सूरज की तरह जलना भी होगा। जब वे कक्षा 5 में थे, तो विद्यालय में उनके साथ एक घटना घटी। वे एक रूढ़िवादी पुरोहित के लड़के के साथ सबसे आगे की बेंच पर बैठते थे। एक दिन जब नए शिक्षक ने ये देखा तो वे क्रुद्ध हो गए और कलाम को पीछे की बेंच पर बैठने को कहा। कलाम थोड़ा व्यथित जरूर हुए, परंतु हतोत्साहित होने की बजाए उन्होंने ठान लिया कि वे पिछली बेंच पर बैठ कर भी अपने सपनों को पूरा करेंगे और दुनिया को दिखा देंगे। उनका कहना था कि देश की सर्वोत्तम प्रतिभाएँ स्कूल की पिछली बेंचों से आती हैं। उनके जीवन में एक अन्य महत्वपूर्ण घटना घटी जिसने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। दरअसल कक्षा के एक शिक्षक बच्चों को सिखा रहे थे कि पक्षी कैसे उड़ते हैं। लगभग आधे घंटे भर तक प्रयत्न करने पर भी जब बच्चों को कुछ समझ नहीं आया तो उन्हें एक युक्ति सूझी। वे सारे बच्चों को लेकर समुद्र के किनारे गए। उनका मानना था कि सैद्धांतिक शिक्षा से ज्यादा कारगर व्यावहारिक शिक्षा होती है। उन्होंने पक्षियों की पूँछ की दिशा और पंखों की बनावट आदि से बच्चों को सुगमता से सिखा दिया। इस घटना ने कलाम को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने ठान लिया कि उन्हें इन पक्षियों जैसा उड़ना है। वे एक फाइटर विमान के चालक बनना चाहते थे।

अपने इस सपने को पूरा करने का मौका उन्हें तब मिला जब उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मद्रास में दाखिला लिया। यहाँ उन्होंने एरोनाटिकल इंजीनियरिंग शाखा में पढ़ाई की। एक बार उन्हें एक फाइटर विमान के मॉडल बनाने का प्रोजेक्ट मिला। महीने भर की मेहनत के बाद जब उन्होंने प्रोजेक्ट अध्यापक को सौंपा तो उन्होंने प्रोजेक्ट को सिरे से अस्वीकृत कर दिया। कलाम ने नए मॉडल के लिए फिर से एक महीने की मांग की, परंतु अध्यापक ने सिर्फ 3 दिन का समय दिया। प्रोजेक्ट पूरा न होने पर उनकी छात्रवृत्ति छिनने का डर था। बस फिर क्या था, कलाम ने तीन दिन तक भोजन और नींद का त्याग कर दिया और तीन दिनों के अंदर मॉडल तैयार कर दिया। जब अगले दिन वे अपना प्रोजेक्ट लेकर अध्यापक के पास गए, तो अध्यापक हतप्रभ रह गए। उनकी आंखों में खुशी के आँसू थे।

कलाम जीवन में विफलताओं से विचलित होने वालों में से नहीं

थे। उनके अनुसार छोटा लक्ष्य साधना एक गुनाह है, लक्ष्य तो सदैव उच्च ही होना चाहिए। अपने सपनों को पूरा करने के लिए उन्होंने भारतीय वायुसेना देहरादून में साक्षात्कार दिया, जिसमें 25 अभ्यर्थियों में से केवल 8 का चुनाव होना था। बदकिस्मती से कलाम 9 वें स्थान पर रहे और उनका यह सपना टूट गया।

सन् 1958 में उन्होंने भारतीय अनुसंधान और रक्षा संगठन में प्रवेश किया। वे अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत को अग्रणी बनाना चाहते थे। उन्होंने दिन-रात अथक मेहनत की। जब मिसाइल बनकर तैयार हुई तो उसे प्रक्षेपास्त्र तक ले जाना एक दुष्कर कार्य था। कलाम तनिक भी विचलित नहीं हुए और बैलगाड़ियों और साइकिल के द्वारा मिसाइल के पुर्जों को प्रक्षेपास्त्र तक पहुँचाया। अंततः 21 नवंबर, 1963 को भारत ने अपने प्रथम सैटेलाइट का प्रक्षेपण किया।

सन 1969 में कलाम ने इसरो में प्रवेश किया। वहाँ उन्होंने दशकों की मेहनत कर नाग, त्रिशूल, पृथ्वी आदि बैलिस्टिक मिसाइल का निर्माण किया। इस प्रकार भारत ने वैज्ञानिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण मुकाम हासिल किया। इसी वजह से उनका नाम 'मिसाइल मैन' की तरह प्रसिद्ध हो गया।

अपनी विद्वत्ता, सेवाभाव और अंतरिक्ष जगत में भारत की सेवा के चलते उन्हें 1961 में 'पद्मभूषण' और 1997 में सर्वोच्च पुरस्कार 'भारतरत्न' से नवाज़ा गया। उन्होंने 1998 में पोखरन द्वितीय में भी अभिन्न योगदान दिया जिसके चलते भारत उन देशों में शुमार हो पाया, जिनके पास परमाणु ताकत है।

अपनी लोकप्रिय छवि के चलते वे 11 वें राष्ट्रपति के रूप में नियुक्त हुए। अपना कार्यकाल समाप्त करने के बाद वे विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन व व्याख्यान का कार्य करने लगे। उनके पास 40 से ज्यादा विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदत्त डॉक्टरेट की उपाधि थी।

27 जुलाई, 2015 को आइआइएम शिलांग में एक व्याख्यान के दौरान उन्हें दिल का दौरा पड़ा। सारे भारत में दुःख की लहर दौड़ गई। यह एक युग की समाप्ति थी। कलाम साहब आज हमारे बीच नहीं हैं। परंतु उनकी सीख, उनका अनुकरणीय जीवन, उत्कृष्ट जिजीविषा, अदम्य साहस आदि गुण हमें जीवन के सही पथ पर आगे बढ़ने का रास्ता दिखाते रहेंगे।

● देशराज चढ़ार, उप प्रबंधक

## हिंदी कहानी / लेख प्रतियोगिता - तृतीय पुरस्कार

### क्रांतिवीर प्रताप सिंह बारहठ



यह कहानी एक ऐसे क्रांतिवीर की है, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन एक ही सपना पूरा करने के लिए लगा दिया, और यह सपना था आज़ाद रहने का. 25 वर्ष के छोटे से जीवन काल में इस स्वतंत्रता सेनानी ने एक आदर्श जीवन जिया और अंत तक अंग्रेजों के सामने न झुकने के प्रण का पालन

किया. इस क्रांतिकारी का नाम था प्रताप सिंह बारहठ. इनके पिता का नाम केसरी सिंह बारहठ था, जिनके नाम की गूँज राजस्थान तक ही सीमित नहीं है. लार्ड कर्जन के दिल्ली दरबार में मेवाड़ के महाराणा को शामिल होने से रोकने के लिए 'चेतावनी रा चुंगट्या' लिखा. मेवाड़ राज्य की आन-बान तथा स्वतंत्रता के लिए मर-मिटने वाले केसरी सिंह बारहठ के पुत्र प्रताप सिंह भी इस आज़ादी के यज्ञ में शामिल हो गए. वैसे, संपूर्ण बारहठ परिवार ही आज़ादी के लिए अपने-अपने स्तर पर प्रयासरत था.

प्रताप का जन्म 24 मई, 1893 को राजस्थान के भीलवाड़ा जिले की शाहपुरा रियासत में हुआ था. प्रारंभिक शिक्षा समाप्त करने के बाद वे क्रांतिवीर अमरचंद्र के सानिध्य में आ गए. प्रताप उग्र स्वभाव के एक सुदृढ़ क्रांतिकारी थे जो गरम दल के विचारों से प्रेरित होते थे. वे क्रांतिकारी रासबिहारी बोस की अनुपालना में लग गए.

बात सन् 1912 की है, जब देश की राजधानी में दिल्ली दरबार की तैयारी चल रही थी. इसी दौरान, रासबिहारी बोस ने वायसराय लार्ड हेस्टिंग्स पर बम फेंकने की योजना बनाई. इस कार्य के लिए उन्होंने 19 वर्षीय प्रताप सिंह बारहठ एवं उनके चाचा जोरावर सिंह बारहठ को चुना. दिनांक 23 मई 1912 को जब ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति के प्रतीक वायसराय लार्ड हेस्टिंग्स का भव्य जुलूस दिल्ली में निकल रहा था, तभी प्रताप और उनके चाचा ने रैली पर एक के बाद एक कई बम फेंके. लगातार बमबारी के चलते वायसराय लहलुहान हो गया. एक बार के लिए यह जुलूस को रोकना पड़ा. जोरावर और प्रताप उस समय वहाँ से फरार होने में सफल रहे मगर अंग्रेज

सरकार ने दोनों की गिरफ्तारी के लिए शिकंजा कस लिया था. जोरावर ब्रिटिश हुकूमत को चकमा देकर निकलने में कामयाब रहे और इसमें प्रताप का भी बड़ा योगदान रहा.

प्रताप एक जुनूनी और वीर क्रांतिकारी थे, उन्हें अभी ब्रिटिश हुकूमत को उनके घुटनों पर लाना था. इसी के चलते सक्रिय रूप से क्रांति की गतिविधियों में भाग लेते रहे. अंततः एक दिन प्रताप को गिरफ्तार कर लिया गया. उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए उन पर बनारस षड्यंत्र मामले के तहत मुकदमा चलाया गया. स्पेशल सेशन कोर्ट बनारस ने उन्हें कठोर कारावास की सजा सुनाई और उन्हें बरेली के केंद्रीय कारागार में भेज दिया गया.

बरेली जेल में प्रताप को कई तरह की यातनाएँ दी गईं ताकि वे अपने साथियों का ठिकाना बता दे. प्रताप को अपने क्रांतिपथ से विचलित करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने अमानवीयता की सारी हदें पार कर दी. अंततः प्रताप दृढ़ रहे तो वायसराय के खास मंत्री चार्ल्स क्लीवलैंड प्रताप से मिलने बरेली जेल पहुँचे. चार्ल्स ने प्रताप को तथा उनके पिता को आजाद करने का लालच दिया, चाचा के वारंट को रद्द करने की बात कही, फिर भी प्रताप ने अपने साथियों के बारे में कोई जानकारी नहीं दी. चार्ल्स ने प्रताप को भावनात्मक ठेस पहुँचाने के लिए यहाँ तक कह डाला कि "तुम्हारी माँ तुम्हारी याद में हर क्षण विलाप करती है." इस पर प्रताप ने जो बात कही, वह इतिहास के पन्नों में अमिट स्याही से लिख दी गई है. उन्होंने कहा "मैं एक अपनी माँ का विलाप रोकने के लिए हजारों माताओं के विलाप का कारण नहीं बनूंगा."

इसी तरह अमानवीय यातनाओं का सिलसिला लगातार जारी रहा और अंत में 7 मई 1918 को प्रताप ने मात्र 25 वर्ष की उम्र में अपनी जीवन देश हित में न्योछावर कर दिया. प्रताप ने ना सिर्फ निःस्वार्थ भाव का उदाहरण प्रस्तुत किया, बल्कि देश के नौजवानों में आज़ादी के लिए एक विस्फोटक उर्जा का भी संवहन किया. आज़ादी के इस वीर सैनिक को देश सलाम करता है.

● अर्पित छीपा, सहायक प्रबंधक

## स्वतंत्रता के 75 वर्ष - विश्वास और अखंडता के साथ



2021 की 15 अगस्त को हमने भारत का 75 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया. इस वर्ष हम स्वतंत्रता के 75 वर्षों का उत्सव मनाएंगे. किसी भी स्वतंत्र देश के लिए

उसकी अखंडता सर्वोपरि होती है. भारतीय संविधान की संघात्मक प्रकृति में यही भावना निहित है. अनुच्छेद 1 में 'भारत अर्थात् इण्डिया, राज्यों का एक संघ होगा', शब्दावली का प्रयोग इसी उद्देश्य से किया गया है. गौरतलब है कि देश की अखंडता इतनी महत्वपूर्ण मानी गयी है कि अनुच्छेद 19 के अंतर्गत राज्य को नागरिकों की स्वतंत्रता के ऊपर देश की अखंडता के आधार पर प्रतिबंधन लगाने की शक्ति भी प्राप्त है. इसके अतिरिक्त अखंडता शब्द को 42 वें संविधान संशोधन, 1976 द्वारा संविधान की उद्देशिका में भी जोड़ा गया. इस शब्द का प्रयोग पृथकतावादी प्रवृत्तियों को रोकने के लिए किया गया. अतः इस संशोधन के उपरांत 'हम भारत के लोग' भारत के 'समस्त नागरिकों में राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढसंकल्प' हैं. यहाँ यह स्पष्ट करना यथोचित होगा कि स्वतंत्रता पर यह प्रतिबंध किसी भी प्रकार से व्यक्तियों - नागरिकों की स्वतंत्रता में बाधक नहीं हैं, अपितु उनकी स्वतंत्रता के साथ ही उनको राष्ट्रीय एकता के प्रति प्रतिबद्ध करते हैं जिसमें देश और व्यक्ति का कल्याण निहित है क्योंकि राष्ट्र और व्यक्ति परस्पर निर्भर हैं और तारतम्य में ही प्रगति कर सकते हैं.

इसी क्रम में भारत की एकता और अखंडता के प्रतीक और आधुनिक भारत के शिल्पकार महान स्वतंत्रता सेनानी व भारत रत्न, लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, जिन्होंने अनेकों रियासतों में बंटे भारत के एकीकरण में अद्वितीय भूमिका निभाई थी, की जयंती 31 अक्टूबर को मनाने के लिए भारत सरकार द्वारा साल 2014 में 'भारतीय एकता दिवस' की शुरुआत की गई. भारत सरकार ने 2019 से सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' भी शुरू किया है. इस पुरस्कार का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बढ़ावा देने और एक मजबूत और अखण्ड भारत के मूल्य को सुदृढ़ करने में उल्लेखनीय और प्रेरक योगदान के लिए सम्मानित करना है. 'एकता की मूर्ति' का निर्माण और राष्ट्रीय एकता दिवस की प्रतिज्ञा भी इसी दिशा में कुछ अन्य प्रयास हैं.

इन सभी बातों से साफ़ है कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में राष्ट्रीय अखंडता को नितांत आवश्यक माना गया है और इस पर समय-समय पर बल दिया गया है. इसलिए यह समझना

आवश्यक है कि अखंडता का सही तात्पर्य क्या है और यह भारत के लिए इतनी आवश्यक क्यों है ?

राष्ट्र के तीन अनिवार्य अंग हैं - भूमि, निवासी और संस्कृति. एक राष्ट्र के दीर्घ जीवन और सुरक्षा के लिए इन तीनों का सही सम्बन्ध बना रहना परम-आवश्यक होता है. यदि किसी राष्ट्र की भूमि से वहाँ के राष्ट्रवासी उदासीन हो जाएंगे तो राष्ट्र के विखंडन का भय बना रहेगा. राष्ट्र की भूमि माता-तुल्य है. 'माता भूमि: पुत्रो अहम् पृथिव्याः' अर्थात् मेरी माता भूमि है और मैं पृथ्वी माता का पुत्र हूँ, यह भावना राष्ट्र की अखंडता के लिए परम आवश्यक है. इसी प्रकार केवल भूखंड ही अपने आप में कोई अस्तित्व नहीं रखता. देश का निर्माण वहाँ रहने वाले देशवासियों से ही होता है. राष्ट्र जनों को एक सूत्र में बाँधने वाली राष्ट्रीय संस्कृति होती है. केवल एक स्थान पर निवास करने वाला जनसमूह राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकता, जब तक कि वह परस्पर सांस्कृतिक सूत्र से न बंधा हो. धार्मिक सद्भाव, सहयोग, पर्व, उत्सव, कला और साहित्य संस्कृति के अंग हैं. स्पष्ट है कि राष्ट्रीय अखंडता एक राष्ट्र के जीवन और समृद्धि के लिए अनिवार्य शर्त है. राष्ट्रीय अखंडता में केवल शारीरिक समीपता ही महत्वपूर्ण नहीं होती बल्कि उसमें मानसिक, बौद्धिक, वैचारिक और भावनात्मक निकटता भी आवश्यक है.

रखें परस्पर मेल मन से छोड़कर अविवेकता, मन का मिलन ही मिलन है, होती उसी से एकता.

राष्ट्रीय अखंडता का मतलब ही होता है, राष्ट्र के सब घटकों में भिन्न-भिन्न विचारों और विभिन्न आस्थाओं के होते हुए भी आपसी प्रेम, एकता और भाईचारे का बना रहना. किसी भी सभ्य और लोकतांत्रिक राष्ट्र की आधारशिला यह है कि वह अपने नागरिकों में लिंग, धर्म, जाति, आर्थिक स्थिति आदि के आधार पर बिना किसी भेदभाव के सबके साथ समान व्यवहार करे. वास्तव में राज्य द्वारा नागरिकों से समान व्यवहार की यह प्रक्रिया समाज में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उन तार्किक सामाजिक मूल्यों की स्थापना करती है, जो किसी भी राष्ट्र के जीवन और विकास की आधारभूत आवश्यकता होती है.

भारत एक संघ राज्य है. डेढ़ अरब की जनसंख्या, 28 राज्यों एवं 8 केंद्र शासित प्रदेशों वाला विशाल देश है. अनेक राज्यों या प्रदेशों में निवास करने वाले, भिन्न भिन्न रूप रंग, आचार-विचार, भाषा और धर्म के लोग यहाँ निवास करते हैं. इन सभी की स्थानीय संस्कृतियाँ हैं. भारत विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और सम्प्रदायों का संगम स्थल है. इन सबसे मिलकर एक भारतीय संस्कृति का विकास हुआ है. हम सभी भारतीय हैं, यही भावना भारत को राष्ट्र का रूप देती है. भारत के लिए अखंडता का अर्थ है, भारतीय के रूप में हमारी पहचान. सभी धर्मों, परम्पराओं, आचार-विचारों, भाषाओं और उप-संस्कृतियों

का आदर करना, भारत भूमि और भारत के सभी निवासियों के प्रति प्रेमभाव रखना. अनेकता में एकता की यह भावना ही हमारे राष्ट्र का आधार है।

ऋग्वेद के अंतिम सूक्त, जिसे संगठन सूक्त कहा जाता है, में कहा गया है कि

हों विचार समान सबके, चित्त-मन सब एक हों,  
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों,  
हों सभी के मन तथा संकल्प अविरोधी सदा,  
मन भरें हो प्रेम से, जिससे बड़े सुख सम्पदा।

हमारे मूल्य गहराई से अपनी इन्हीं जड़ों से जुड़े हुए हैं जिन पर हमारे ऋषि-मुनियों और विचारकों ने भी बल दिया है. शुरु से हमारा दृष्टिकोण उदारवादी है. हम सत्य और अहिंसा का आदर करते हैं. हमारे इन मूल्यों को सभी धर्मग्रंथों में स्थान मिला है. चाहे कुरान हो या बाइबिल, गुरुग्रंथ साहिब हो या गीता, हजरत मोहम्मद, ईसा मसीह, गुरुनानक, बुद्ध और महावीर, सभी ने मानव मात्र की एकता, सार्वभौमिकता और शांति पर जोर दिया है. भारत के लोग चाहे किसी भी पंथ के हों, अन्य पंथों का आदर करना जानते हैं. क्योंकि सभी का सार एक ही है. इसीलिए हमारा राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष है. यहां सभी धर्मों और सम्प्रदायों को बराबर का दर्जा मिला है. हिन्दू धर्म के अलावा जैन, बौद्ध और सिक्ख धर्म का उद्भव यहीं हुआ है. हमारे देश में सभी धर्मों के लोग जानते हैं कि उनकी संस्कृति एक है. सभी मानते हैं कि उनके पूर्वज एक थे. भले ही बाद में उनके पूर्वजों ने अलग-अलग पूजा-पद्धतियाँ अपनाईं. यही कारण है कि सदियों से उनमें एकता के भाव परिलक्षित होते रहे हैं और उनकी जीवन-पद्धति एक है.

परन्तु आज हमारी राष्ट्रीय अखंडता संकट में है. भारत के अस्तित्व और सुरक्षा को गम्भीर चुनौतियाँ भीतर और बाहर दोनों से हैं. भीतर से प्रादेशिक संकीर्णता, धार्मिक असहिष्णुता, नक्सलवाद, आतंकवाद, जातीय संकोच आदि स्वार्थपूर्ण राजनीति देश को विखंडन की ओर ले जा रही हैं. तो बाहर से पड़ोसी देशों के षड्यंत्र हमको तोड़ने के लिए कटिबद्ध हैं. विदेशी लोगों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाकर सैकड़ों वर्षों तक हमें गुलामी भोगने के लिए मजबूर किया था. हमारे देशी शासक भी सत्ता की लोलुपता से अंधे होकर यही नीति अपना रहे हैं. जब देश आज़ाद हुआ था तो उस वक्त प्रबुद्ध समझे जाने वाले कई लोगों ने यह घोषणा की थी कि विविधताओं के इस देश का बिखरना तय है. सीधे तौर पर देखें तो आज उनकी बात असत्य मालूम पड़ती है. पर अगर गहराई में जाकर समझा जाए तो यह समझने में देर नहीं लगती कि भले ही देश ना टूटा हो लेकिन धर्म, जाति आदि के नाम पर समाज बंटा जरूर है. आर्थिक और सामाजिक कारणों से विभिन्न स्थानों पर रहने वाले लोगों और जातियों, जन-जातियों में समान अवसर प्रदान करने हेतु कुछ नीतियों का निर्माण आवश्यक है किन्तु इस प्रकार की नीतियाँ अनंत काल तक चलाये जाने से असामंजस्य और विद्वेष की भावना भी जन्म ले रही है. सभी

को मिलकर इस पर मतैक्य स्थापित करना अपरिहार्य है.



राष्ट्र के भूखंड के हर भाग की रक्षा के लिए सेना है. बाहरी आक्रमण अथवा राष्ट्रीय संकट की घड़ी में सेना ही आगे आती है. लेकिन राष्ट्रीय

अखंडता की रक्षा में देश के हर नागरिक की भूमिका होती है क्योंकि देश में हम सब के बीच छुपे हुए देश द्रोहियों के असली रूप को केवल जनता ही अपनी शक्ति से पहचान सकती है और इनको सही रास्ते पर आने के लिए मजबूर कर सकती है. अपने प्रतिनिधि चुनते समय हमें उनके पूर्व इतिहास और चरित्र पर ध्यान देना चाहिए. लोभ, लालच या स्वार्थवश ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे हमारी अखंडता पर संकट आए. इसके अतिरिक्त चुनाव प्रणाली में भी अभूतपूर्व परिवर्तन अब समय की मांग है.

मैंने कहीं पढ़ा था कि, 'भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता की साधना है. भारत विविध क्यारियों से सजा एक विशाल उद्यान हैं. नाना प्रकार के रत्नों से गुंथा मानवता के कंठ का हार है. किन्तु जब उपवन की क्यारियाँ द्रोह पर उतारू हो जाएँ, माला के फूल, शूल बनकर चुभने लगें तो यह साधना स्वयं संकट में आ जाती है. रत्नहार के टूटने पर हीरा हो गया पत्रा, नीलम हो या पुखराज, सब धरती पर बिखर जाते हैं. संस्कृति की सुरभि, इतिहास का गौरव और संगठन की शक्ति का लाभ तभी तक मिलेगा, जब तक राष्ट्रीय अखंडता सुरक्षित रहेगी. देश की अखंडता यदि संकट में पड़ी तो गुलामी के द्वार फिर से खुल जाएंगे.'

इतिहास गवाह है कि भारत भूमि पर विदेशी आँखे निरंतर ललचाती रही हैं. जब जब हम एक रहे, विजयी रहे, आक्रमण की बाढ़ हमारी एकता की चट्टान से टकराकर चूर चूर हो गई और जब हम बिखरे, हमने मुहं की खाई, हम परतंत्र हुए. हजारों वर्षों की अपमानजनक गुलामी हमें यही सिखाती है कि एक होकर रहो और एक राष्ट्र बने रहो. संगठन ही सभी शक्तियों की जड़ है. एकता के बल पर ही अनेक राष्ट्रों का निर्माण हुआ है. प्रत्येक वर्ग में एकता के बिना देश कदापि उन्नति नहीं कर सकता. एकता में महान शक्ति है. एकता के बल पर बलवान शत्रु को भी पराजित किया जा सकता है. देश को बांटने वाले विदेशी आक्रमण या षड्यंत्र को विफल बनाना और आंतरिक एकजुटता बनाए रखना, यही राष्ट्रीय अखंडता की भावना है. भारतवासियों को हर कीमत पर एक सूत्र में बंधे रहना चाहिए तथा राष्ट्र अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए. विविध धर्मों, आचारों, भाषाओं और प्रदेशों वाले देश को तो एकता की अत्यंत आवश्यकता होती है क्योंकि ऐसे समाज में काफी विविधताएं पहले से ही

मौजूद होती हैं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने आपसी भेदभाव को मिटाकर एक होने का संदेश दिया है।

क्या साम्प्रदायिक भेद से है एक्य मिट सकता अहो,  
बनती नहीं क्या एक माला, विविध सुमनों की कहो।

राष्ट्रीय अखंडता के साथ साथ, राष्ट्र से प्रेम और गर्व की भावना स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी। यही भावना विश्वास की जननी है। विश्वास मानव प्रवृत्ति की वह विशेषता है जिसके बल पर वह असाध्य को भी साध लेता है। अंग्रेजी में कोलोनियल हैंगओवर कहे जाने वाले रोग से तो हम दशकों से ग्रसित रहे ही हैं परन्तु यह चिंताजनक है कि भारतवासियों में विदेशी वस्तुओं, संस्कृति, भाषा आदि का आकर्षण बढ़ता ही जा रहा है। हम गुप्त जी की इन पंक्तियों को भूल बैठे हैं -

भू-लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ ?  
फैला मनोहर गिरी हिमालय और गंगाजल जहाँ,  
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?  
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारत वर्ष है।

भारत विश्व में एकता का प्रतीक है। विश्व स्तर पर जहाँ देश अपने राष्ट्रीय धर्म पर चलते हैं, वहीं भारत अपनी धर्म निरपेक्ष नीति पर चलता है। भारतीय नागरिकों को समाजवादी रूप में समान रूप से शासन द्वारा आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक सहयोग प्रदान किया जाता है, जिससे प्रत्येक राज्य एवं प्रत्येक क्षेत्र में रहने वाला भारतीय नागरिक अपनी रुचि एवं स्वतंत्रता से जीवन यापन करता है। भारतीय नागरिक स्वेच्छा से निर्वाचन के समय अपने वोट का प्रयोग कर सकता है। भारत ऐसा देश है जो अपने आप में संप्रभुत्व संपन्न है। किसी भी देश के लिए संप्रभुत्व संपन्न होना स्वयं में श्रेष्ठता है। भारत सरकार अपने आंतरिक नीतियों में निर्णय लेने, देश की सुरक्षा एवं आर्थिक नीतियों में पूर्ण सक्षम है। कोई भी अन्य देश भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक नीति-निर्णयों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। भारतीय नागरिक अपने गणतंत्र भारत देश में रहते हुए जो स्वतंत्रता एवं सुखानुभूति प्राप्त करते हैं वह संसार के किसी देश में पाया जाना दुर्लभ है। उदाहरण के लिए भारत के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्राप्त है। मानव-जीवन के विकास के लिए स्वतंत्रता और सुविधाएं अनिवार्य होती हैं। इनके बिना मानव आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति नहीं कर सकता है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने भारतीय नागरिकों को न केवल मूल अधिकार प्रदान किए बल्कि उनके संरक्षण की भी पूरी व्यवस्था की। भारतीय संविधान में वर्णित मूल अधिकारों को न्यायालय के प्रवर्तन एवं सुरक्षा की शक्ति प्राप्त है। भारत का कोई भी नागरिक अपने मूल अधिकारों की सुरक्षा के लिए उच्चतम न्यायालय से अनुरोध कर सकता है। भारतीय सर्वोच्च न्यायालय लोकतंत्र का पहरेदार है। भारतीय नागरिक विश्व स्तर पर भी स्वयं को सुरक्षित एवं शांतिमय महसूस करता है। क्योंकि भारत एक गुट निरपेक्ष देश है। इतना ही नहीं भारत की नीतियां पंचशील सिद्धांतों पर आधारित रहती हैं। देश के पंचशील सिद्धांत को

जून 1955 में एशिया और अफ्रीका के 29 देशों ने स्वीकार किया था। भारतीय नागरिक को रंगभेद की नीति से प्रभावित नहीं होना पड़ता। आज भी यूरोपीय देश अपनी जातीय उच्चता के कारण स्थानीय जनता का शोषण करते हैं। भारत में अनेक आदिवासी जातियां निवास करती हैं, सभी को समान अधिकार प्राप्त है। भारत का प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी भी धर्म, जाति राज्य, क्षेत्र, वेशभूषा से क्यों न जुड़ा हो, फिर भी वह अपने आप में भारतीय है। भारत बहु भाषा-भाषी देश है। हिंदी भारत की राज्य भाषा है, पर यहाँ अन्य सभी भाषाओं का सम्मान किया जाता है। भारतीय संस्कृति वसुधैव-कुटुम्बकम् नीति पर आधारित है। यह कहने में अतिशयोक्ति न होगी कि भारतीय नागरिक होना एक गर्व का विषय है। इस भावना को बनाए रखने के लिए प्रत्येक नागरिक से सहयोग एवं समर्पण अपेक्षित है। हमें स्मरण होना चाहिए कि

विश्व जनों से प्रेम हो,  
नहीं क्षत्रुता राग,  
पर हो सबको सर्वप्रथम,  
निज भारत अनुराग।

हर नागरिक का यह परम धर्म है कि राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य से परिचित रहे और उसका पालन करे। सबको राष्ट्र का हित ध्यान में रखकर चलना चाहिए। राष्ट्र जिएगा तो सब जिएंगे। यदि राष्ट्र टूटा तो सबको धराशायी और धूल धूसरित होना पड़ेगा। भारत की अखंडता भारतीयों के लिए जीवन मरण का प्रश्न है, इसीलिए आपसी विद्वेष नहीं विश्वास, यही हमारा नारा होना चाहिए।

75 वर्षों की अपनी स्वतंत्र भारत माँ को हम यह विश्वास दिलाते हैं कि संगठन की शक्ति को हम पहचानेंगे और अनेकता में एकता का आंतरिक मन से आचरण करेंगे जिससे भारत की अखंडता अक्षुण्ण रहेगी और भारत पुनः 'विश्व गुरु' बन कर उभरेगा और युगों-युगों तक भारतीय नागरिकों के लिए गर्व का विषय बना रहेगा।

उत्तर में हिमगिरि से लेकर दक्षिण में रामेश्वर महान,  
प्राची में ब्रह्मपुत्र नदी से, पश्चिम में सिंधु का वितान,  
ऐसे विस्तृत सुविशाल देश के राष्ट्रीय हैं हम इस नाते,  
संगठन सूत्र में मचल-मचल, हम आज पुनः बंधते जाते।  
माँ के खंडित मंडित मंदिर, का शिलान्यास करते जाते..

हम में अखंड सांस्कृतिक ऐक्य, हम में सदैव इतिहास साम्य,  
धार्मिक विचारधारा-पुनीत, आदर्श मूल सिद्धांत साम्य,  
संगठन भवन निर्माण हेतु, आधार स्तंभ मिलते जाते,  
संगठन सूत्र में मचल-मचल, हम आज पुनः बंधते जाते।  
माँ के खंडित मंडित मंदिर, का शिलान्यास करते जाते..

● स्वर्णिमा अग्रवाल, वरिष्ठ प्रबंधक

## वैली ऑफ फ्लावर्स



इस साल जब हम सब कॉलेज की सहेलियों ने बाहर जाने का फैसला किया. बहुत साल से मेरी एक सहेली को वैली ऑफ फ्लावर्स जाने की इच्छा थी जो कि उत्तराखंड में स्थित है तो वहाँ जाने की तैयारी हमने शुरू की. मई महीने में ही हमने युथ होस्टल एसोसिएशन ऑफ इंडिया में अपना रजिस्ट्रेशन करवाया. यह एक मान्यता प्राप्त संस्था है जिनके दुनिया भर में होस्टल्स हैं. यह सात दिन का भ्रमण कार्यक्रम था जो कि ऋषिकेश से शुरू होकर ऋषिकेश में ही समाप्त होना था. यह 8 अगस्त से 14 अगस्त तक का कार्यक्रम था. यह एक ट्रेकिंग प्रोग्राम था. इसके पूर्व तैयारी के लिए हमने कर्जत में भीमाशंकर का एक ट्रेक किया जो कि बहुत साहसपूर्ण था. लेकिन इस ट्रेक ने हमें एक हौसला दिया कि इस उम्र में भी हम ट्रेकिंग कर सकते हैं.



हमने 6 अगस्त को राजधानी से अपनी यात्रा शुरू की. 7 अगस्त की शाम को ऋषिकेश पहुँच गए जो कि हमारा बेस कैंप था. यहाँ का माहौल एकदम मिलिट्री स्टाइल था. समय का बेहद पाबंद...

ज्यादातर सामान हमें बेस कैंप पर ही रखना था और कम से कम सामान लेकर दूसरे दिन 8 अगस्त

को सुबह 5.30 बजे हम हमारी बस से जोशी मठ के लिए निकल पड़े. बस से हमने देव प्रयाग, रूद्र प्रयाग, कर्ण प्रयाग, नंदा प्रयाग का दर्शन किया. प्रयाग उसे कहते हैं, जहाँ दो या तीन नदियों का संगम होता है. ये करीबन 8 से 10 घंटे का सफर था, जो की 6150 फीट की उच्चाई पर स्थित है. यहाँ हमारे रहने का प्रबंध किया गया था. सुबह-सुबह चाय, बाद में नाश्ता, दोपहर का पैकड लंच, शाम को सूप, रात का भोजन और सोते समय बॉर्नवीटा. ये हमारा दिन भर की आहारचर्या थी. जोशी मठ की सुंदरता का क्या कहना. इसे आप चारधाम यात्रा का गेटवे कह सकते हैं. यहाँ बादल जमीं से ऊपर आते दिखाई देखे जा सकते हैं.



9 अगस्त से हमारा ट्रेकिंग सही मायने में शुरू हुआ. जोशी मठ से हमें गोविंदघाट जाना था जहाँ से हमारा ट्रेकिंग आरंभ होना था. दूसरे दिन सुबह 6 बजे हम जोशी मठ से निकले और 45 मिनट की यात्रा के बाद हम बस से गोविंदघाट पहुँच गए. यहाँ से हमें पैदल घागरिया जाना था जो कि 14 किलोमीटर दूर था. यहाँ रास्ता काफी उतार और चढ़ाव का था. यहाँ से हेलीकाप्टर सेवा भी है जो कि आपको 5 मिनट में घागरिया पहुँचा देती है लेकिन जो हमारा मुख्य ट्रेकिंग था, वह हमने सुबह 9 बजे शुरू किया और शाम को 6.30 बजे हम

हमारे बेस कैंप घागरिया पहुँच गए. रास्ते में अनगिनत पहाड़ और अनगिनत झरने थे. घागरिया के आगे 7 किलोमीटर पर सिक्खों का पवित्र स्थान "हेमकुंड साहब" है. इसलिये बहुत से यात्री यहाँ का रास्ता पैदल या बोझा ढोने वालों की मदद द्वारा तय करते हैं. इस यात्रा में मेरी मुलाकात एक ऐसे ही व्यक्ति के साथ हुई जो कि रोजी रोटी के लिए आदमी को सर पर बिठा कर ले जाने का काम कर रहा था. उसका नाम देव सिंग था. उसने मेरा सामान बीच रास्ते में उठा कर मेरी बहुत मदद की. ऐसा लगा कि इस कठिन घड़ी में भगवान मिल गया हो. रास्ता बहुत कठिन था. पैर भी बहुत दर्द कर रहे थे. पूरे दिन चलकर हम शाम को हिमालयन गेस्ट हाउस पहुँच गए. घागरिया 10200 फीट पर स्थित है. यहाँ पर 4-5 डिग्री तक तापमान था.

दूसरे दिन 10 अगस्त की सुबह हमें वैली ऑफ फ्लावर्स जाना था. सुबह सुबह 6.30 बजे हम वैली ऑफ फ्लावर्स के लिए निकल पड़े. यहाँ जाने के लिए पूर्व अनुमति लेना जरूरी है जो ऑनलाइन मिल जाती है. यहाँ पर बोझा ढोने वाले को अनुमति नहीं है, क्योंकि रास्ता बहुत ही छोटा और पथरीला है, झरनों



को पार करके जाना पड़ता है. तकरीबन 3-4 किलोमीटर ऊँचे पहाड़ों को पार करके हम इस जगह पर पहुँच गए. रास्ता बहुत ही कठिन था, पर रास्ते पर मिल रहे झरनों ने हमें और हौसला दिया. झरनों का पानी पीने से एक नयी स्फूर्ति आ गयी. दोपहर को 1.30 बजे हम वैली ऑफ फ्लावर्स पहुँच गए. इस वैली का निर्माण 1982 में हुआ. यह पूर्णतः प्राकृतिक स्थल है. यहाँ का नज़ारा क्या कहना. 'सिलसिला' का गाना याद आ गया "ये कहाँ आ गए हम"... लेकिन जल्द ही वहाँ से निकलना पड़ा क्योंकि मौसम बदल रहा था और 4-5 घंटे का अंतर भी तो तय करना था शाम से पहले, क्योंकि यहाँ बिजली नहीं है. शाम के 6 बजे हम हमारे गेस्ट हाउस में पहुँच चुके थे. कब आँख लग गयी पता ही नहीं चला.

11 अगस्त नारळी पूर्णिमा थी और हमें जाना था सिक्खों के पवित्र स्थान "हेमकुंड साहेब जी" जो कि 15200 फीट पर स्थित है. सिक्खों के 10 वें गुरु गोविन्द सिंग को यह स्थान समर्पित है. दिन भी पवित्र था और स्थान भी. यहाँ गुरुद्वारा 1 बजे दर्शन के लिए बंद हो जाता है. हमने किसी की मदद से जाने का निर्णय ले लिया और आते वक्त हमने पैदल आने का तय किया, क्योंकि इतने दूर आकर अगर दर्शन न हुए तो क्या फायदा? यहाँ पर जो मददगार रहते हैं वो हमेशा जोड़ी में चलते हैं. तकरीबन 2 घंटों के प्रवास के बाद हम "हेमकुंड साहेब जी" पहुँच गए. बारिश जोरदार चल रही थी. कोहरा भी घना था. ठण्ड भी बहुत थी. गुरुद्वारा के सामने हेमकुंड झील है जहाँ सिख स्नान करते हैं. लेकिन पानी बहुत ही ठंडा होता है. तालाब के पास हर जगह आपको



ब्रह्म-कमल दिखाई देते हैं." हेमकुंड साहेब जी " का प्रबंधन बहुत ही कुशल है. यहाँ गुरुद्वारे में बहुत सुकून मिला. यहाँ पहुँचते ही ठण्ड के मारे मेरे हाथ-पाँव काँपने लगे, क्योंकि हम 15000 फीट की ऊँचाई पर थे. वहाँ गुरुद्वारे में आपको कम्बल दी जाती है. उसे पहनने से हमें थोड़ी राहत मिली. गरम गरम सूजी का प्रसाद खाकर तथा लंगर में खाना खाकर बहुत अच्छा लगता है. हेमकुंड झील के पास लक्ष्मण मंदिर है. यहाँ की सुंदरता तो शब्दों में बयान नहीं कर सकते. जब आप 15000 फीट से

चलते चलते नीचे आते हैं तो हर मोड़ पर एक अलग-अलग नज़ारा दिखाई देता है. आधे रास्ते पर खाने की दुकानें भी हैं. जहाँ आप मैग्गी और पराठों का स्वाद चख सकते हैं, और साथ में गरमा गरम चाय. उतरने के लिए हमें 5 घंटे का समय लग गया. लेकिन सबसे लुभावना प्राकृतिक सौंदर्य यहाँ का ही था.

12 अगस्त को हम बद्रीनाथ के लिए निकल पड़े. घागरिया से गोविंदघाट फिर एक बार पैदल जाना था. 14 किलोमीटर पर हमारी बस खड़ी थी. गोविंदघाट पहुँचते-पहुँचते दोपहर के 3.30 बज गए. वहाँ से बद्रीनाथ 25 किलोमीटर था. बद्रीनाथ 10830 फीट पर स्थित है. वहाँ हम तकरीबन 6 बजे पहुँच गए. यहाँ हमारा यूथ हॉस्टल में निवास का प्रबंध किया गया था. यहाँ से बद्रीनाथ मंदिर 1 किलोमीटर पर था. जाते ही हमने बद्रीनाथ के दर्शन किये. यहाँ श्री विष्णु का मंदिर है. नर पर्वत और नारायण पर्वत के बीचोबीच यहाँ मंदिर स्थित है. महाभारत के काल से इसका महत्व है. चारधाम में से यह एक धाम है.

दूसरे दिन 12 अगस्त को हमें माना गांव जाना था. हम सुबह 7 बजे निकले. माना गांव हमारे देश की सीमा पर स्थित है.



यहाँ देश की आखिरी चाय की दुकान है. इसके आगे चीन बॉर्डर है. इसलिए यह गांव मिलिट्री के निगरानी में है.

माना गांव में गणेश गुफा है जहाँ गणपति जी ने व्यास जी के कहने पर महाभारत लिखा था. यहाँ व्यास गुफा भी है जहाँ श्री व्यास जी ने वेदों का निर्माण किया. यहाँ गुफा 5330 साल पुरानी है. यहाँ सरस्वती नदी का उद्गम भी माना जाता है.

यहाँ भीम पूल भी है जो भीम जी ने सरस्वती नदी पर बनवाया था जो कि स्वर्ग रोहिणी की राह पर है और जहाँ से पांडव युद्ध के पश्चात स्वर्ग की ओर चले गए थे. वहाँ पर ही वसुंधरा फॉल भी है. माना गांव में वृद्धों की संख्या अधिक मात्रा में दिखाई देती है. वहाँ की महिलाये हाथों से स्वेटर शाल बुनकर बेचती है और वो भी किफायती दाम में. शाम को फिर एक बार बद्रीनाथ की कर्पूर आरती का सौभाग्य प्राप्त हुआ. रात के समय मंदिर का दर्शन बहुत ही लुभावना लगता है. मंदिर के बाजू से ही अलकनंदा नदी बहती है. वही आगे जाकर गंगा से मिलती है. यहां गरम पानी के कुंड भी हैं.



14 अगस्त हम सुबह बद्रीनाथ से ऋषिकेश के लिए निकल पड़े. सफर 11 घंटे का था. ऋषिकेश में काफी भीड़ होने के कारण हम रात के 9 बजे ऋषिकेश पहुँच गए. बारिश होने की वजह से काफी जगह पर भूस्खलन हुआ था. यहाँ पर हमारा ट्रेक ख़तम हो गया. यूथ हॉस्टल की तरफ से हमें सर्टिफिकेट दिया गया.

वहाँ से हम हरिद्वार के लिए निकल पड़े. यहाँ हम 15 अगस्त को स्वतंत्रता का 75वां साल मनाकर व्यास आश्रम में एक दिन के लिए विश्राम किया. आश्रम के पीछे ही गंगा घाट पर गए. शाम को

हर की पौड़ी पर गंगा आरती का आनंद उठाया. गंगा आरती का सौंदर्य तो क्या बताऊ. गंगाजी में हर कोई भक्तिभाव से सराबोर थे. शाम के वक्त वो बहुत ही प्यारे लग रहे थे.

दूसरे दिन 16 अगस्त को हम दिल्ली की ओर निकल पड़े और 16 अगस्त को मुंबई पहुँच गए. इस तरह वैली ऑफ फ्लावर्स का ट्रेक हमने हमारी उम्र की 56 वें वर्ष पर किया, यही मेरे लिए खुशी की बात थी. यहाँ ट्रेक पर विविधता में एकता का दर्शन हुआ. कोई असम से था, कोई बंगाल से, कोई राजकोट से तो कोई कर्नाटक से, हम मुंबई से थे. 25 वर्ष के जवान से लेकर 56 साल के लोग भी थे. सही में यह एक यादगार ट्रेक था, जहाँ अगर आपका दिमाग हार नहीं मानेगा तो आप अपनी मंज़िल पर जरूर पहुँच जाओगे.

● नीलम शानभाग, वरिष्ठ प्रबंधक

### कार्मिक समाचार

#### आगमन :

सुश्री मयुरी दत्तात्रय राऊत, सुश्री लक्ष्मी शर्मा, सुश्री अंकिता अमरजीत सिंह की सहायक प्रबंधक के रूप में तथा सुश्री शुद्धोसोत्ता आचार्य का प्रशिक्षु के रूप में आगमन हुआ.



#### पदोन्नतियां :

निदेशक एवं महाप्रबंधक सुश्री मधुलिका भास्कर ने दिनांक 29 अक्टूबर, 2022 से साबीनि के निदेशक के रूप प्रभार लिया.

#### महाप्रबंधक (स्केल VI) के रूप में पदोन्नति :

श्री पॉल लोबो की महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति हुई.

#### उप महाप्रबंधक (स्केल VI) के रूप में पदोन्नति :

श्री मुकेश दरमवाला, श्री संजय मोकाशी, श्री मुकेश वाघेला तथा श्री साजन वर्गीस की दिसंबर, 2022 में उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति हुई.

#### विदेशी तैनाती :

उप प्रबंधक, श्री सत्तनाथ सिवा ई, श्री संदीप जयप्रकाश मौर्य की लंदन शाखा कार्यालय तथा सुश्री निहारिका सुतार की जीआइसी री साउथ अफ्रीका में तैनाती हुई.

#### स्थानांतरण :

मुख्य प्रबंधक सुश्री सुचिता उदय कुडतरकर का गिफ्ट सिटी अहमदाबाद, वरिष्ठ प्रबंधक श्री दीपक मिश्रा का दिल्ली संपर्क कार्यालय, वरिष्ठ प्रबंधक श्री चंद्रभूषण का गिफ्ट सिटी अहमदाबाद कार्यालय तथा वरिष्ठ प्रबंधक श्री राजन शर्मा का दिल्ली संपर्क कार्यालय, महाप्रबंधक सुश्री गिरीजा सुब्रमणियन का एग्रीकल्चर इंड्योरेंस कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड तथा महाप्रबंधक श्री पॉल लोबो का जीआइसी हाउसिंग फायनांस लिमिटेड में स्थानांतरण हुआ.

#### सेवानिवृत्ति :

उप प्रबंधक सुश्री मेधा संतोष काळे, वरिष्ठ सहायक श्री सुनील टी. जाधव तथा श्री विजय चूरी, महाप्रबंधक श्री दीपक गोडबोले, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री बिजयानंद पाटी, सुश्री आरती शाह, मुख्य प्रबंधक श्री विश्वनाथन कृष्णन, श्री के. थंगराज, वरिष्ठ सहायक सुरेश कोळी, श्री गणेश आइनकर, सहायक प्रबंधक श्री दयानंद गुरव, वरिष्ठ प्रबंधक श्री रवींद्र कल्याणपुर, मुख्य प्रबंधक सुश्री शैला बैदूर, श्री अविनाश नाइकअपराज की पूर्णकालीन सेवानिवृत्ति तथा सहायक महाप्रबंधक श्री जोसेफ बालाजी ने ऐच्छिक सेवानिवृत्ति प्राप्त की.

'क्षितिज' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं.

● मानव संसाधन विभाग



## निगम में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

31 अक्टूबर से 4 नवंबर, 2022 के दौरान निगम में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर निगम में निबंध और पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन दोनों प्रतियोगिताओं के लिए विषय था - “एक विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत”。 इनमें भाग लेने के लिए हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं का विकल्प दिया गया था। दोनों भाषाओं के लिए पृथक रूप से पुरस्कार राशि 4000, 3000 तथा 2000 रुपए की घोषित की गई थी।

इस आयोजन का समापन तथा प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह निगम परिसर में 4 नवंबर, 2022 को दोपहर 4 बजे आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में महाप्रबंधक श्री रामस्वामी तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री सुरेंद्र कुमार दीक्षित उपस्थित रहे। इस अवसर पर सभी विजेताओं को प्रमाणपत्र वितरित किए गए। पुरस्कार विजेताओं के नाम निम्नवत हैं :

### हिंदी निबंध प्रतियोगिता :

प्रथम पुरस्कार - सुश्री इन्दिरा, सहायक प्रबंधक  
द्वितीय पुरस्कार - श्री दीपक मिश्रा, वरिष्ठ प्रबंधक  
तृतीय पुरस्कार - श्री सौरभ त्रिवेदी, उप प्रबंधक

### अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता :

प्रथम पुरस्कार - श्री प्रतीक सारस्वत, सहायक प्रबंधक  
द्वितीय पुरस्कार - श्री रंजन कुमार, उप प्रबंधक  
तृतीय पुरस्कार 1. श्री अमित दत्ता, उप प्रबंधक  
2. श्री शशिधर ईरुकला, सहायक प्रबंधक

### पोस्टर प्रतियोगिता :

प्रथम पुरस्कार - सुश्री प्रणोती किर्तीकर, वरिष्ठ प्रबंधक  
द्वितीय पुरस्कार - सुश्री प्रेरणा पुत्रन, सहायक महा प्रबंधक  
तृतीय पुरस्कार - श्री आलोक पटेल, वरिष्ठ प्रबंधक

## निगम में सतर्कता जागरूकता सप्ताह - झलकियां



● जयश्री डहाळे, उप प्रबंधक

## एक विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत - प्रथम पुरस्कार



‘गुजरात के मोरबी में मच्छू नदी पर केबल ब्रिज टूट कर गिर गया.’ यह सिर्फ खबर भर नहीं है. भ्रष्टाचार के भार में दब कर लगभग 140 लोगों को अपनी जान देनी पड़ी. ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ मना रहे देश के लिए यह अच्छी खबर नहीं है कि आज भी चंद लाख रूपयों के लिए जान की कीमत ताक़ पर रख दी जाती है.

हम भ्रष्टाचार मुक्त भारत की बात करें तो 21 दिसंबर, 1963 के दिन राममनोहर लोहिया जी द्वारा भ्रष्टाचार पर संसद में दिया वो ऐतिहासिक भाषण याद आ ही जाता है. उन्होंने कहा था

“गंगा के निचले हिस्सों में सफाई करने का फायदा नहीं है, जब भ्रष्टाचार गंगोत्री पर हो. कानून का राज्य नहीं रह गया है हिंदुस्तान में..... पक्षपात, मनमानी, घूसखोरी और नियमों की अवहेलना, ये सब भ्रष्टाचार में समझे जाने चाहिए.... और भ्रष्टाचार सिर्फ ईमान की कमी नहीं है, समझ की कमी भी है.”

लोहिया जी के इन वचनों से सीख लेते हुए हमें सबसे पहले देखना है कि भ्रष्टाचार क्या है, क्यों है, कहाँ-कहाँ है, उसका स्वरूप क्या है और यह देश के विकास में किस तरह बाधक बन सकता है.

**भ्रष्टाचार का अर्थ** - इसका अर्थ होता है भ्रष्ट आचरण. भ्रष्टाचार में सिर्फ पैसों का लेन-देन ही नहीं आता, बल्कि किसी भी तरह से अपनी सार्वजनिक शक्तियों का दुरुपयोग करना, छलपूर्वक व्यवहार और व्यक्तिगत लाभ के लिए कानून तोड़ना भी शामिल है. सीधे शब्दों में लोगों में नैतिकता की कमी होना भ्रष्टाचार है. यह समस्या भ्रष्ट चरित्र के नागरिकों के निजी स्वार्थ के कारण उत्पन्न होती है. इस प्रकार यह बाहरी देश द्वारा थोपी गई समस्या न होकर आंतरिक जनित है.

**भ्रष्टाचार के स्वरूप** का वर्णन इस तरह किया जा सकता है-

मैं आज का रावण हूँ,  
कलयुग की धमनियों में,  
बहता हुआ बेईमान चरित्र  
कहने को अंधकारमय रूप है,  
मगर मेरे कई रंग-रूप हैं,  
कानून-नियमों को तोड़ता,  
अपने स्वार्थ के लिए जोड़ता,  
कुर्सी की ताकत दिखलाता,  
मैं हूँ भ्रष्टाचार कहलाता.

**भ्रष्टाचार का विस्तार** - भ्रष्टाचार के हाथ कहाँ-कहाँ तक फैले हुए हैं, यह सवाल ज़हन में आते ही सबसे पहले राजनीति का नाम आता है. अब राजनीति साधु-संतों और समाजसेवा का मामला नहीं रहा है. उनके चारों तरफ स्वार्थ, सत्ता और लालच से लबालब भरा हुआ समुद्र फैला हुआ है. उस समुद्र के बीच रहकर राजनेताओं के कर्तव्य कहीं बह जाते हैं. इस लालच की तेज धार में देशप्रेम के भाव तिरोहित हो जाते हैं. इनके अलावा प्रशासक, वकील, डॉक्टर, व्यापारी, निर्माण कार्य के ठेकेदार और सरकारी नौकर आदि भ्रष्टाचार करने का कोई भी मौका नहीं चूकते हैं.

भ्रष्टाचार के फैले हुए जाल और उसका भारत के विकास पर पड़ने वाले नकारात्मक परिणाम को इस छोटे से उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है. हम देखते हैं कि कई प्रशासनिक नौकरियों में रिश्तत एकदम खुलेतौर पर चलती है. सत्ता और पैसों की मदद से प्रशासक बनने वाले व्यक्ति के लिए ईमानदार और नैतिकवान बने रहने की उम्मीद किस तरह की जा सकती है? ऐसे व्यक्ति से कैसे उम्मीद की जाएगी कि वो अपने कर्तव्यों का पूरी जिम्मेदारी से निर्वहन करेगी/करेगा. इस तरह से कोई व्यक्ति सत्ता के केंद्र तक तो जा सकता है, लेकिन इनके द्वारा सार्वजनिक कार्यों में धाँधली की जाती है, जनता के पैसों को विकास कार्यों की अपेक्षा अपने हितों में साधा जाता है, सरकारी नौकरियों में अपने रिश्तेदारों को नौकरियाँ दिलाकर भाई-भतीजावाद को बढ़ावा देकर योग्य लोगों का रास्ता रोका जाता है. इससे सेवाओं की गुणवत्ता ख़राब होती है. अंततः ये सब कारक हमारे देश के विकास में बाधक बनते हैं.

**भ्रष्टाचार को रोकने के कुछ उपाय** - विकसित भारत बनाने के लिए आवश्यक है कि हम भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाएँ. मेरा मानना है कि इसके लिए सबसे पहला कर्तव्य स्वयं नागरिक का है. उसे इतना नैतिक और चरित्रवान होना चाहिए कि भ्रष्टाचार का मौका मिलने पर भी इससे दूर रहें. लेकिन, इसके लिए उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनना जरूरी है और यह काम अपनी शिक्षा से तीन लोग कर सकते हैं - माता, पिता और गुरु. इसके बाद कर्तव्य आता सरकार और प्रशासन का. सरकारी स्तर पर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए ‘केंद्रीय

अन्वेषण ब्यूरो', 1964 में 'केंद्रीय सतर्कता आयोग' जैसी स्वतंत्र और स्वायत्त संस्था की स्थापना और लोकपालों की नियुक्ति महत्वपूर्ण प्रयास है। भ्रष्ट लोक सेवकों को दंडित करने के लिए 'भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988' का भी प्रावधान है। 2018 में संशोधन करते हुए रिश्वत लेने के साथ रिश्वत देना भी अपराध की श्रेणी में रखा गया। इस प्रकार भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए कानूनी तौर पर प्रविधान पर्याप्त है। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने अधिकारों और कानून के प्रति जागरूक बनें। इसके अलावा सरकारी कामकाज में पारदर्शिता

को बढ़ाना जरूरी है। साथ ही, भ्रष्टों को सजा देने के लिए जाँच एजेंसियों को सशक्त करना होगा ताकि न्याय और कानून में विश्वास बना रहे। इसके लिए 'जीरो टॉलरेंस' की नीति के साथ आगे बढ़ना चाहिए। भ्रष्टों के खिलाफ न्यायिक कार्रवाई को त्वरित करना होगा। इन सब प्रयासों से हम भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण की ओर बढ़ पाएँगे तथा सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार हटाकर विकसित देश बन पाएँगे।

● **इन्दिरा, सहायक प्रबंधक**

## एक विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत - द्वितीय पुरस्कार



भ्रष्टाचार अर्थात् भ्रष्ट + आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा तथा आचार का अभिप्राय है आचरण। अर्थात् भ्रष्टाचार से हमारा अभिप्राय है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो।

भारत में भ्रष्टाचार चर्चा और आन्दोलनों का एक प्रमुख विषय रहा है। स्वतंत्रता के एक दशक

बाद से ही भारत भ्रष्टाचार के दलदल में धँसा नजर आने लगा था, और उस समय संसद में इस बात पर बहस भी नहीं होती थी। 21 दिसंबर, 1963 को भारत में भ्रष्टाचार के खतमे पर संसद में हुई बहस में डा. राम मनोहर लोहिया जो भाषण दिया था। वह आज भी प्रासंगिक है।

भारत में अवैध गतिविधियों को करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मनी लांड्रींग एवं रिश्वतखोरी से भ्रष्टाचार का गहरा नाता है। भारत विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार की समस्या का सामना कर रहा है। यह देश को आंतरिक रूप से नष्ट कर रहा है।

अक्सर कहा जाता है कि भारतीय राजनेता भ्रष्ट है, लेकिन यह एक मात्र ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ भ्रष्टाचार है, भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में है। यह समय है, जब हमें से प्रत्येक को अपने देश पर भ्रष्टाचार के नकारात्मक प्रभाव को महसूस करना चाहिए, और अपने देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने में योगदान देना चाहिए। भ्रष्टाचार सरकारी और गैर सरकारी द्वारा शक्ति और संसाधनों दोनों का अनावश्यक उपयोग है। यह देश में असमानताओं के सबसे बड़े कारणों में से एक है। सरकारी कर्मचारियों पर सरकारी संपत्ति चोरी करने का आरोप होता है।

भारत भर के गांव और शहरों के सरकारी अधिकारियों राजनेताओं रियल इस्टेट डेवलपर्स आदि के समूह अवैध तरीके से भूमि विकसित करने और बेचने के लिए अधिग्रहण करते हैं। ऐसे अधिकारियों और राजनेताओं को उनके पास शक्ति और प्रभाव के कारण बहुत अच्छी तरह से संरक्षित किया जाता है।

भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी व्यापक है। सार्वजनिक ठेके कुख्यात भ्रष्ट लोगों को दिए जाते हैं। खासकर राज्य स्तर पर। भारतीय कंपनियां मनी लांड्रींग के लिए पब्लिक ट्रस्टों का दुरुपयोग कर रही हैं। भ्रष्टाचार आय के स्तर के लिए आर्थिक विकास को कम करता है।

भारत में भ्रष्टाचार की जड़े इतनी गहरी हैं कि उसमें देश की न्याय व्यवस्था को भी नहीं छोड़ा है। न्यायिक अधिकारियों को बड़ी मात्रा में रिश्वत देकर अपराधी जल्द छूट जाते हैं। केवल एक मात्र यही उदाहरण नहीं है। इसी तरह के अनेक उदाहरण हैं, लेकिन भ्रष्टाचार मुक्त समाज से अधिक विकास होगा, और न्याय की जीत होगी। भ्रष्टाचार में कमी से शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी सार्वजनिक सेवाओं में निवेश की गुंजाइश बढ़ेगी।

वर्ष, 2005 में, भारतीय संसद में सूचना अधिकार अधिनियम विधेयक पारित किया गया, जिसमें सरकारी अधिकारियों को नागरिकों द्वारा अनुरोधित जानकारी प्रदान करनी होती है। जानकारी न देने पर दंडात्मक कार्यवाही का सामना करना पड़ता है।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत की राह कठिन जरूर है, लेकिन असंभव नहीं है। भ्रष्टाचार के खिलाफ कानून को सख्त बनाया जाना चाहिए, और मुकदमे को तेज गति से लागू किया जाना चाहिए। भ्रष्ट आचरण में लिप्त न होकर सरकार को इसे समाप्त करने हेतु हर संभव प्रयास करना चाहिए। भ्रष्टाचार के आरोप वाले उम्मीदवार को चुनाव लड़ने से रोक लगा देनी चाहिए। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो को अधिक सतर्क रहना चाहिए, और अधिक अधिकार देना चाहिए। निम्न गतिविधियों पर नजर रखने के लिए सभी सरकारी कार्यालयों को निगरानी प्रणाली के तहत रखा जाना चाहिए। भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने को सुरक्षित बनाया जाना चाहिए। युवा पीढ़ी को रिश्वत के भुगतान और स्वीकृति से इनकार करना चाहिए। तभी भ्रष्टाचार मुक्त भारत संभव है।

भारत को विकास के पथ पर लाना है, भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाना है।

● **दीपक मिश्रा, वरिष्ठ प्रबंधक**

## “एक विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत” - तृतीय पुरस्कार



भारत में भ्रष्टाचार की दर काफी अधिक है। अन्य बातों के अलावा देश के विकास और प्रगति पर भ्रष्टाचार का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अधिकांश विकासशील देश इस समस्या का सामना कर रहे हैं। इन देशों में सरकार और व्यक्ति यह समझ नहीं पा रहे हैं कि भ्रष्टाचार के तरीकों से उन्हें कुछ हद तक फायदा हो सकता है लेकिन वास्तव में यह पूरी तरह से देश के विकास को बाधित करता है और अंततः उनके लिए बुरा है।

भारत में भ्रष्टाचार के कारण

हमारे देश में भ्रष्टाचार का स्तर बहुत अधिक है। इसके कई कारण हैं। यहां इन कारणों पर एक संक्षिप्त नज़र डाली गई है :

### 1. नौकरी के अवसरों की कमी

बाजार में नौकरी योग्य युवाओं की संख्या की तुलना में कम है हालांकि कई युवक इन दिनों बिना किसी काम के घूमते हैं, जबकि अन्य नौकरी लेते हैं जो उनकी योग्यता के बराबर नहीं हैं। इन लोगों में असंतोष और अधिक कमाई का लालच उन्हें भ्रष्ट तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

### 2. सख्त दंड की कमी

हमारे देश के लोग भ्रष्ट प्रथाओं जैसे कि रिश्वत देना और लेना, आयकर का भुगतान नहीं करना, व्यवसाय चलाने के लिए भ्रष्ट माध्यमों का सहारा लेना आदि का पालन करते हैं। लोगों की गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए कोई सख्त कानून नहीं है। यहां तक कि अगर लोग पकड़े भी जाते हैं तो उन्हें इसके लिए गंभीर रूप से दंडित नहीं किया जाता है। यही कारण है कि देश में भ्रष्टाचार बहुत अधिक है।

### 3. शिक्षा की कमी

शिक्षित लोगों से भरे समाज को कम भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ सकता है। अगर लोग शिक्षित नहीं होंगे तो वे अपनी आजीविका कमाने के लिए अनुचित और भ्रष्ट तरीकों

का उपयोग करेंगे। हमारे देश का निम्न वर्ग शिक्षा के महत्व को कमजोर करता है और इससे भ्रष्टाचार में वृद्धि होती है।

### 4. लालच और बढ़ती प्रतियोगिता

बाजार में लालच और बढ़ती प्रतियोगिता भ्रष्टाचार के बढ़ने के कारण भी हैं। लोग इन दिनों बेहद लालची बन गए हैं। वे अपने रिश्तेदारों और मित्रों से ज्यादा कमाना चाहते हैं और इस पागल भीड़ में वे अपने सपनों को पूरा करने के लिए भ्रष्ट तरीकों को अपनाने में संकोच नहीं करते हैं।

### 5. पहल का अभाव

हर कोई देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना चाहता है और इस दिशा में कुछ भी नहीं करने के लिए सरकार की आलोचना करता है। लेकिन क्या हम अपने स्तर पर इस मुद्दे को रोकने की कोशिश कर रहे हैं? नहीं हम नहीं कर रहे। जानबूझकर या अनजाने में हम सब भ्रष्टाचार को जन्म दे रहे हैं। कोई भी देश से इस बुराई को दूर करने के लिए पहल करने और टीम के रूप में काम करने के लिए तैयार नहीं है।

### भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण

भ्रष्टाचार के कारणों के बारे में सभी को पता है। ऐसा कहा जाता है कि एक बार समस्या के कारण को पहचान लिया तो आधा काम तो वैसे ही पूरा हो जाता है। अब समस्या पर चर्चा करने की बजाए समाधान ढूंढने का समय है।

सरकार को भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए क्योंकि अगर यह समस्या ऐसी ही चलती रही तो हमारा देश प्रगति नहीं कर सकता। भ्रष्टाचार की ओर बढ़ने वाली प्रत्येक समस्या को उसकी जड़ों समेत हटा दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए जनसंख्या की बढ़ती दर के कारण अच्छे रोजगार के अवसरों की कमी होती है जो भ्रष्टाचार का कारण बनता है। सरकार को देश की आबादी को नियंत्रित करने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए। इसी तरह भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण के लिए हर पहलू पर काम करना चाहिए।

### निष्कर्ष

हमारे देश भ्रष्टाचार की समस्या से छुटकारा पा सकता है और बेहतर हो सकता है। इसलिए हम सभी को वह सब कुछ करना चाहिए जो हम इस बड़े मुद्दे को सुलझाने के लिए कर सकते हैं।

● सौरभ त्रिवेदी, उप प्रबंधक

## कविताएं

समय कहां है ?



छोटे थे तब जाते थे, सब मिलके खेत खलिहानों में,  
मेलों में, बाजारों में, मिट्टी के मैदानों में,  
पर शहरों में अब जाम हुआ, गांवों में वीराना आम हुआ,  
चाय पर बातें करने को, अब समय कहां है ?

न फिक्र समय की थी, न सब्जी लेकर घर जाना था,  
न जेब पतलून में थी, न बटुआ, न आना था,  
अब बिल बिजली का भरना है, सुबह जल्दी ट्रेन पकड़ना है,  
थम कर सांसे भरने को, अब समय कहां है ?

दो महीने बीत गए जब, नया बल्ला गेंद मैं लाया था,  
सब मित्रों को जोड़ कर, एक व्हाट्सएप समूह बनाया था,  
अब कपड़े धोने में, बल्ले से रोज शतक बन जाता है,  
मैदानों के आस पास, कोई मित्र नज़र नहीं आता है,  
बारिश में खुलकर भीगने को, अब समय कहां है ?

शामें ये कटती नहीं, और दिन यूं ही निकल जाता है,  
पंचांगों में तारीखों का, अंक बढ़ता ही जाता है,  
आज की तो चिंता थी कल और कल की चिंता आज है,  
इस ही आज-कल की चिंता में डूबा ये समाज है,  
शाम को छत पर जाने को, अब समय कहां है ?

फंसे हुए तो हैं सब ही,  
इस नौ से पांच के जाल में,  
बचे हुए पांच से नौ भी,  
निकले हैं इस ही सवाल में,  
कि कल का क्या होगा कल को  
अरे, जो भी होगा देखेंगे,  
आनंद आज का आज है  
और आज ही इसको ले लेंगे,  
वरना, खुद में खुद को जी लेने को,  
समय कहां है ?

टाइम आता नहीं, लाया जाता है . . .



टाइम आता नहीं लाया जाता है, इसलिए अपना टाइम आएगा नहीं,  
मैं अपना टाइम लाएगा, तू अपना टाइम लाएगा

आज, कल, परसों, करते-करते गुजार दिए बरसों,  
अब बरसेगा तू, गरजेगा तू, खड़केगा तू, शोला सा भड़केगा तू,  
अपने सीने में आग, तू ऐसी जलाएगा,  
तू अपना टाइम लाएगा . . .

मत ले अंगड़ाई, खर्च कर तू मेहनत की पाई- पाई,  
ये उदासी है जो छाई, एक दिन छट जाएगी,  
किस्मत पे पड़ी धूल भी ये हट जाएगी,  
जब आलस को तू अपने दफनायेगा,  
तू अपना टाइम लाएगा . . .

क्यूँ होता तू हताश है, तेरे सवाल का तू खुद जवाब है,  
हल भी तेरे ही पास है,  
दिल का दुखड़ा तू आखिर कब तक गायेगा?  
अब अपने इस दुखड़े को, तू हुंकार अपनी बनाएगा,  
तू अपना टाइम लाएगा . . .

सोशल मीडिया का बुखार, तेरे सर पे चढ़ा,  
'शो ऑफ' के चक्कर में, भला क्यूँ है पड़ा,  
दोहरा ये किरदार, तू आखिर कब निभाएगा ?  
तू अपना टाइम लाएगा . . .

तुझे दुनिया ने लताड़ा, जिन्दगी ने पछाड़ा,  
तुझे जड़ से उखाड़ा, अब लताड़ को बना के दहाड़ा,  
लम्बी छलांग तू लगाएगा, फिर जिन्दगी भी खाएगी पटखनी,  
तू दांव ऐसा लगाएगा, तू अपना टाइम लाएगा . . .

पिंजरे में करके कैद, तूने खुद को रखा था,  
चाहता तो था उड़ना, पर कभी उड़ ना सका था,  
अब लगा के पूरी जान, भरेगा इतनी ऊँची उड़ान,  
फिर नज़र भी ना किसी को तू आएगा,  
तू अपना टाइम लाएगा . . .

● प्रतीक शर्मा, सहायक प्रबंधक

● वेदांत झकरवार, उप प्रबंधक

## नेवी मैरेथॉन 2022



नौसेना दिवस कार्यक्रम के तहत नौसेना द्वारा रविवार दिनांक 20 नवम्बर 2022 को नेवी मैरेथॉन का आयोजन किया गया। मैरेथॉन में विभिन्न क्षेत्र के 15 हजार से भी अधिक लोगों ने भाग लिया। नौसेना द्वारा 21.1 किलो मीटर की एअर क्राफ्ट कैरियर रन, 10 किलो मीटर की डिस्ट्रॉयर रन और 5 किलो मीटर की फ्रिगेट रन का आयोजन किया गया।

इंडियन ऑयल डब्ल्यूएनसी नेवी हाफ मैराथन एक अलग तरह की दौड़ है और इसका उद्देश्य कुछ अलग करना है। यह भारतीय नौसेना के पश्चिमी नौसेना कमान द्वारा आयोजित की जाती है। इसका पांचवां संस्करण रविवार, 20 नवंबर 2022 को मुंबई में निर्धारित किया गया। 2016 में अपनी स्थापना के बाद से, यह भागीदारी हासिल करने में बेहद सफल रहा है। 2019 में पिछले संस्करण में इस आयोजन में 15,000 से अधिक धावकों ने भाग लिया था। नौसेना का लक्ष्य इस साल के संस्करण को भागीदारी और उत्साह के नए स्तरों पर ले जाना और एक आनंददायक दौड़ का आयोजन है। ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण मार्ग के साथ नियोजित यह कार्यक्रम सभी प्रतिभागियों को दक्षिण मुंबई के प्रतिष्ठित परिसर की झलक प्रदान करता है।

### 21 किलो मीटर विमान वाहक रन

हाफ मैराथन दौड़ना किसी अन्य की तरह केवल एक अनुभव नहीं है। इसे पूरा करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। 21 किमी. रन की अपनी शारीरिक और मानसिक चुनौतियां हैं। अनुभवी धावकों को इस समृद्ध चुनौती को लेने और अपनी सीमाओं का परीक्षण करने के लिए सुनहरा अवसर था।

### 10 किलो मीटर डिस्ट्रॉयर रन

10 किमी. रन पूरा करना आपकी फिटनेस का प्रमाण है। यह प्रतिबद्ध धावकों को अनुभवी अगले स्तर पर ले जाने के लिए मंच प्रदान करता है।

### 5 किलो मीटर फ्रिगेट रन

परिवारों और समूहों को फन रन में भाग लेने के माध्यम से एक स्वस्थ जीवन शैली की ओर बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है। चाहे आप अकेले दौड़ें या सह-धावकों के साथ, शांत मार्ग निश्चित रूप से आपके लिए एक अविस्मरणीय स्मृति बना देता है।

जीआइसी री की तरफ कुल 12 धावकों ने इस नेवी मैरेथॉन में भाग लिया। उनके नाम एस प्रकार है।

श्री सचिंद्र साळवी, श्री अंकुश कदम, श्री विनोद सिंग, श्री कणाद मांजरेकर, श्री ओम प्रसाद प्रकाश, श्री आशिष पाटी, श्री हेमंत चौधरी, श्री उपेंद्र कुमार, श्री मर्विन तिकी, सुश्री प्रेरणा पुत्रण, सुश्री रोहिणी पाटील तथा सुश्री विशाखा शिवलकर.



नेवी मैरेथॉन में दौड़ने का मार्ग इस प्रकार था - आज़ाद मैदान से आरंभ होकर, फाउंटन - चर्चगेट रेल्वे स्टेशन - नरिमन पॉइंट - गिरगाव चौपाटी और वापस चर्चगेट रेल्वे स्टेशन - फाउंटन से आज़ाद मैदान तक.

दौड़ के मार्ग पर पानी और एनर्जी ड्रिंक तथा वैद्यकीय सेवाएं उपलब्ध की गई थीं। नेवी बंड के साथ साथ पंजाबी ढोल, महाराष्ट्र के ढोल-ताशा बज रहे थे जो धावकों का उत्साह बढ़ा रहे थे।

21 किलो मीटर विमान वाहक रन सुबह 5 बजे, 10 किलो मीटर डिस्ट्रॉयर रन सुबह 6.15 को, 5 किलो मीटर फ्रिगेट रन सुबह 7.30 बजे आरंभ हुईं।

नेवी मैरेथॉन 2022 में कुल 15200 से अधिक धावकों ने भाग लिया। दौड़ के लिये वातावरण भी बहुत अच्छा था। सुबह की ठंडी हवा सभी धावकों का उत्साह बढ़ा रही थी।

सभी धावक अब 15 जानेवारी, 2023 को होने वाली मुंबई मैरेथॉन का इंतजार कर रहे हैं।

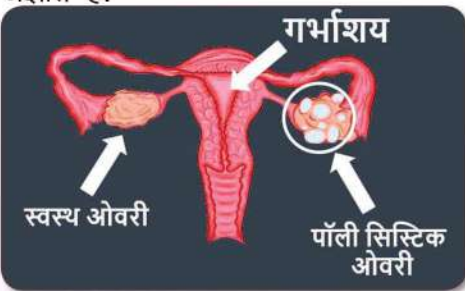
● सचिंद्र साळवी, उप महाप्रबंधक

## पीसीओएस



पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (पीसीओएस) नैदानिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य महत्व का है क्योंकि यह बहुत आम है, जो प्रजनन आयु की पांच महिलाओं में से एक महिला को प्रभावित करता है। इसमें प्रजनन (बांझपन, हाइपरएंड्रोजेनिज्म, हिर्सुटिज्म), चयापचय (इंसुलिन प्रतिरोध, बिगड़ा हुआ ग्लूकोज सहिष्णुता, टाइप 2 मधुमेह, प्रतिकूल हृदय जोखिम प्रोफाइल) और मनोवैज्ञानिक विशेषताएं (बढ़ी हुई चिंता, अवसाद और जीवन की खराब गुणवत्ता) सहित महत्वपूर्ण और विविध नैदानिक प्रभाव हैं। इसे स्टीन-लेवेंथल सिंड्रोम के रूप में भी जाना जाता है।

लक्षणों में मासिक धर्म चक्र में बदलाव और बालों का अधिक बढ़ना शामिल हैं। अनुपचारित रह जाये तो यह बांझपन और अन्य जटिलताओं को जन्म दे सकता है। इसका सटीक कारण अज्ञात है।



इसके शीघ्र निदान और उपचार की सिफारिश की जाती है। वजन घटाने से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों का जोखिम भी कम हो सकता है, जैसे

इंसुलिन प्रतिरोध, टाइप 2 मधुमेह, उच्च कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोग और उच्च रक्तचाप।

### पीसीओएस क्या है ?

पीसीओएस से पीड़ित अधिकांश महिलाएं अपने अंडाशय पर कई छोटे सिस्ट या तरल पदार्थ से भरी थैली विकसित करती हैं। सिस्ट हानिकारक नहीं होते हैं, लेकिन वे हार्मोन के स्तर में असंतुलन पैदा कर सकते हैं।

पीसीओएस से पीड़ित महिलाओं को मासिक धर्म चक्र की

असामान्यताएं, एण्ड्रोजन (सेक्स हार्मोन) के स्तर में वृद्धि, बालों का अधिक बढ़ना, मुंहासे और मोटापे का भी अनुभव हो सकता है।

पीसीओएस से जुड़ी कई स्वास्थ्य स्थितियों के अलावा, जिन पर इस लेख में चर्चा की जाएगी, पीसीओएस महिलाओं में बांझपन का सबसे आम कारण है - क्योंकि यह ओव्यूलेशन को रोक सकता है।

जो महिलाएं पीसीओएस के साथ गर्भधारण कर सकती हैं उनमें गर्भपात, गर्भकालीन मधुमेह, गर्भावस्था से प्रेरित उच्च रक्तचाप, प्रीक्लेम्पसिया और समय से पहले प्रसव की घटनाएं अधिक होती हैं।

### कारण -

वर्तमान में, पीसीओएस का कोई ज्ञात कारण नहीं है। हालांकि, यह अतिरिक्त इंसुलिन, हल्की सूजन और आनुवंशिकी से संबंधित हैं।

### जोखिम -

माना जाता है कि पीसीओएस में एक आनुवंशिक घटक होता है। जो महिलाएँ पीसीओएस से पीड़ित हैं, उनमें पीसीओएस विकसित होने की संभावना उन लोगों की तुलना में अधिक होती है, जिनके रिश्तेदारों में यह स्थिति नहीं होती है। यह पारिवारिक लिंक वाला मुख्य जोखिम कारक है।

चीनी शरीर की ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत है, और यह शरीर में इंसुलिन द्वारा नियंत्रित होता है, जो अग्न्याशय द्वारा स्रावित होता है। इंसुलिन प्रतिरोध वाला व्यक्ति इंसुलिन का कुशलतापूर्वक उपयोग करने में असमर्थ होता है। यह अग्न्याशय को शरीर की ग्लूकोज की जरूरतों को पूरा करने के लिए अतिरिक्त इंसुलिन स्रावित करने के लिए ओवरड्राइव में जाने का कारण बनता है।

एण्ड्रोजन उत्पादन पर इसके प्रभाव के कारण अतिरिक्त इंसुलिन को एक महिला की ओव्यूलेट करने की क्षमता को प्रभावित करने के लिए माना जाता है। शोध से पता चला है कि पीसीओएस वाली महिलाओं में हल्की सूजन होती है जो पॉलीसिस्टिक अंडाशय को एण्ड्रोजन बनाने के लिए उत्तेजित करती है।

### संबंधित स्वास्थ्य जोखिम -

पीसीओएस से जुड़े कई स्वास्थ्य जोखिम हैं। इसमें शामिल है:

टाइप 2 मधुमेह, बांझपन, उच्च कोलेस्ट्रॉल, ऊंचा लिपिड,

स्लीप एपनिया, असामान्य गर्भाशय रक्तस्राव, उच्च रक्तचाप, मोटापा, ये सब अवसाद और चिंता को बढ़ाते हैं और आत्मविश्वास कम करते हैं।

इसके अलावा, इससे एंडोमेट्रियल कैंसर, गर्भकालीन मधुमेह, गर्भावस्था से प्रेरित उच्च रक्तचाप, दिल के दौरों और गर्भपात का खतरा भी बढ़ जाता है।

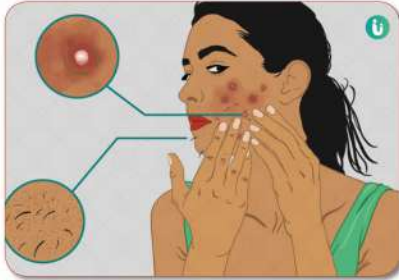
### लक्षण -



अंडाशय पर सिस्ट के अलावा, पीसीओएस के लक्षणों में शामिल हैं:

1. अनियमित माहवारी,
2. अतिरिक्त एण्ड्रोजन स्तर,
3. स्लीप एपनिया,
4. उच्च

तनाव का स्तर, 5. उच्च रक्तचाप, 6. त्वचा टैग, 7. बांझपन, 8. मुंहासे, तैलीय और रूखी त्वचा, 9. उच्च कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स, 10. एक्वेन्थोसिस नाइग्रिकन्स, या त्वचा के काले धब्बे,



11. थकान, 12. बालों का झड़ना, 13. इंसुलिन प्रतिरोध, 14. टाइप 2 मधुमेह, 15. पैल्विक दर्द, 16. अवसाद और चिंता, 17. वजन बढ़ाने या वजन कम करने में कठिनाई सहित वजन प्रबंधन की कठिनाइयाँ,
18. चेहरे और शरीर के बालों का बढ़ना, जिसे हिर्सुटिज्म के रूप में जाना जाता है, 19. कामेच्छा में कमी

### परीक्षण और निदान -

कोई एकल परीक्षण पीसीओएस की उपस्थिति का निर्धारण नहीं कर सकता है, लेकिन एक डॉक्टर चिकित्सा मरीज के रिकॉर्ड के माध्यम से स्थिति का निदान कर सकता है, इसके लिए एक शारीरिक परीक्षा जिसमें एक पैल्विक परीक्षा शामिल है। हार्मोन, कोलेस्ट्रॉल और ग्लूकोज के स्तर को मापने के लिए रक्त परीक्षण किया जाता है और गर्भाशय और अंडाशय को देखने के लिए एक अल्ट्रासाउंड का उपयोग किया जा सकता है।

### इलाज -

पीसीओएस का कोई इलाज नहीं है, लेकिन उपचार का उद्देश्य उन लक्षणों का प्रबंधन करना संभव है जो किसी व्यक्ति को प्रभावित करते हैं।

यह इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या व्यक्ति गर्भवती होना चाहती है और इसका उद्देश्य माध्यमिक चिकित्सा स्थितियों, जैसे हृदय रोग और मधुमेह के जोखिम को कम करना है।

इसके कई अनुशासित उपचार विकल्प हैं, जिनमें शामिल हैं -

1. जन्म नियंत्रण की गोलियाँ: ये हार्मोन और मासिक धर्म को नियंत्रित करने में मदद कर सकती हैं। 2. मधुमेह की दवाएं: यदि आवश्यक हो तो ये मधुमेह को प्रबंधित करने में मदद करती हैं। 3. प्रजनन उपचार: इनमें इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) या गर्भाधान शामिल हैं।

पीसीओएस का कोई इलाज नहीं है, लेकिन कुछ घरेलू और जीवन शैली के हस्तक्षेप से फर्क पड़ सकता है और कुछ लक्षणों से राहत मिल सकती है।

इसमें शामिल है:

### पीसीओएस के घरेलू उपचार -



1. भरपूर मात्रा में फलों और सब्जियों सहित स्वस्थ, संतुलित आहार लेना।
2. नियमित शारीरिक गतिविधि में करना।

3. वजन को संतुलित बनाए रखना, एंड्रोजन के स्तर को कम करने और मधुमेह और हृदय रोग जैसी बीमारियों के जोखिम को कम रखना।

4. धूम्रपान नहीं करना, क्योंकि इससे एण्ड्रोजन का स्तर बढ़ जाता है और हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है

**निष्कर्ष -** पीसीओएस के कारण स्पष्ट नहीं हैं, लेकिन शीघ्र निदान लक्षणों को दूर करने और जटिलताओं के जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है। पीसीओएस के लक्षण वाले किसी भी व्यक्ति को डॉक्टर की सलाह और उपचार अवश्य लेना चाहिए।

● डॉ. अनुराग पी. राऊळ, सहायक प्रबंधक



## तीन दिवसीय सतर्कता कार्यशाला

गोवा में सतर्कता से संबंधित 3 दिन की कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें राष्ट्रीय केमिकल एंड फर्टिलाइजर लिमिटेड, आईडीबीआई बैंक, एनर्जी एफीशियेन्सी सर्विस लिमिटेड, कोल इंडिया लिमिटेड, सेंट्रल इन्स्टिट्यूट ऑफ माइनिंग एंड फ्युयेल रिसर्च, कॉर्पोरेशन कमिशन ऑफ इंडिया, आई एयरपोर्ट सर्विस लिमिटेड, नेशनल टेस्ट हाउस, नेशनल फर्टिलाइजर लिमिटेड और भारतीय साधारण बीमा निगम आदि कंपनियों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में सतर्कता विभाग से 2 अधिकारियों ने भाग लिया।



संबंधित. गैर-सतर्कता वाले मामलों में मानव संसाधन विभाग कार्रवाई करता है और सतर्कता वाले मामलों में मुख्य सतर्कता अधिकारी अपनी राय देते हैं कि इस मामले को पुलिस या सीबीआई में आगे कार्रवाई के लिए भेजा जाए या नहीं।

दूसरे कंपनी के लोगों को बहुत आश्चर्य होता है जब आपके कंपनी में फ्रॉड के केस ना के बराबर होते हैं। जबकि दूसरे कंपनी जैसे बैंक में ये चीजें महीने में 10-12 बार हो जाती है। आज कल साइबर फ्रॉड जैसी घटनाएँ भी बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। हर संगठन में बहुत तरह की समस्या होती हैं जिसमें प्रोक्वोरमेंट से जुड़े मामले, अकाउंट्स के पेमेंट या जीएसटी से जुड़े मामले, इन्श्योरेंस प्रीमियम या क्लेम से जुड़े निपटान के मामले, एलटीएस से जुड़े गलत दावे, महिलाओं के साथ गलत व्यवहार के मामले आदि बातें कभी-कभी हो जाती हैं जिसके ऊपर मानव संसाधन विभाग को कड़ी कार्रवाई करनी पड़ती है।

मेरे लिए यह प्रशिक्षण बहुत जरूरी था क्योंकि सतर्कता विभाग में काम आरंभ करने के बाद बहुत सारी बातें सीखना था। जब आप काम करते हैं तो उसका मूल्यांकन आप नहीं करते। ठीक उसी तरह दूसरों के कामों का मूल्यांकन करना बहुत मुश्किल काम होता है। हालाँकि, आपको व्यवस्था में जो कमजोरियाँ हैं उन्हें देखना पड़ता है कि उसे कैसे ठीक किया जा सकता है। कभी बहुत सारे ऑडिट रिपोर्ट्स पढ़ने होते हैं, कभी बहुत सारी नीतियाँ या एसओपी देखनी पड़ती हैं, कभी बहुत सारे भुगतान वाउचर्स देखने पड़ते हैं, कभी अलग अलग विभाग के लोगों से बातचीत कर उनके काम को समझना पड़ता है, कभी सीवीसी या डीएफएस से आए सवालियों के जवाब देने पड़ते हैं।

हर कंपनी का अपना व्यवसाय होता है जिसे चलाने के लिए उन्हें अच्छे कर्मचारियों की जरूरत होती है। वैसे तो हर कर्मचारी ईमानदारी से काम करते हैं पर कुछ लोग कभी-कभी गलत ढंग से भी काम करते हैं। यदि ऐसा करने से कंपनी को कुछ नुकसान होता है तो ऐसे में कंपनी को सख्त कदम उठाने पड़ते हैं। काम में ईमानदारी के साथ जवाबदेही और

इस कार्यशाला के विषय थे - न्याय में संविधान की भूमिका, एक संगठन में सतर्कता का महत्व, निवारक सतर्कता "एक वैचारिक ढांचा", सतर्कता संगठन और उनके कार्य, मुख्य सतर्कता अधिकारी की भूमिका और कार्य, निवारक सतर्कता के उपाय और स्रोत जैसे व्हिसल ब्लोअर, पारदर्शिता, निवारक सतर्कता पर सीवीसी दिशानिर्देश आदि। वैसे तो सतर्कता विभाग लोगों का काम ज्यादातर गोपनीय होता है, पर ऐसे अधिकारी सब कुछ गुप्त रखते हुए काम करते हैं कि किसी को पता ना चले। इसका मुख्य कारण है कि जब भी किसी तरह की जाँच पड़ताल होती है तो जब तक कोई किसी दस्तावेज़ की रूप में अंतिम निर्णय नहीं आ जाता, तब तक इसकी जानकारी आम कर्मचारियों तक नहीं दी जाती।

कार्यालय में लोग काम करते हैं तो कभी-कभी कर्मचारी से गलतियाँ हो जाती हैं। जिसके लिए उसे छोटी चेतावनी या मेमो देकर जवाब माँगा जाता है। पर जब किसी तरह का फ्रॉड होता है, जिसे कुछ कर्मचारी जानबूझकर संगठन की संपत्ति को नुकसान पहुँचाने या पैसे की हेरा-फेरी करने के लिए करते हैं, तब संगठन के हित को ध्यान में रखते हुए उन कर्मचारियों की खिलाफ मानव संसाधन विभाग को कुछ अनुशासनात्मक कदम उठाने पड़ते हैं।

तकनीकी में जाने की अपेक्षा आसान भाषा में कहें तो केस दो तरह के होते हैं - सतर्कता अथवा गैर-सतर्कता से



पारदर्शिता ज़रूरी है.

हम लोग हिन्दी फिल्में देखते हैं, लोगों को पारिवारिक या रोमांटिक फिल्में देखना ज़्यादा अच्छा लगता है. कोर्टरूम ड्रामा

किसी को अच्छा नहीं लगता. लोगों को काम करते हुए 20-25 साल हो जाते हैं, पर सामान्यतः पुलिस स्टेशन या सीबीआई के ऑफिस नहीं जाते हैं. हर साल संगठन के अधिकारी के लिए भी कार्यशाला का आयोजन कर उन्हें सही तरीके से काम करने के तरीके से जानकारी दी जानी चाहिए. पुनर्बीमा कंपनी होने के नाते हमारी ज़िम्मेदारियां बहुत हैं क्योंकि यहां प्रीमियम या क्लेम करोड़ों में होता है, अगर एक भी गलती हुई तो कंपनी को बहुत नुकसान उठाना पड़ता है. उचित कार्य साधक ज्ञान बहुत ज़रूरी है. साथ साथ प्रशिक्षण भी हर कर्मचारी के लिए ज़रूरी है. वक्त पर काम ख़तम करने का दबाव बहुत होता है, पर काम का सही तरीके से होना भी बहुत ज़रूरी है.

● अजीत बारला, वरिष्ठ प्रबंधक

### चित्रांकन...



● प्रणोती कीर्तिकर, वरिष्ठ प्रबंधक



● कुलकीर्ति भान, सहायक प्रबंधक

### हिंदी प्रतियोगिता प्रश्मंच - झलकियां





सकल प्रीमियम  
₹ 19,122 करोड़

नेट वर्थ  
₹ 59,204 करोड़

सॉल्वेंसी अनुपात  
2.25



### 30 सितंबर, 2022 को समाप्त छमाही के लिए पुनरीक्षित वित्तीय परिणाम

(₹ करोड़ में)

क्र. सं.	विवरण	समाप्त छमाही 30 सितंबर, 2022	समाप्त छमाही 30 सितंबर, 2021
1.	प्रीमियम आय (सकल)	19,122.45	22,664.64
2.	कर पश्चात निवल लाभ/(हानि)	2,549.65	238.82
3.	प्रदत्त साम्य शेयर पूँजी	877.20	877.20
4.	नेट वर्थ (उचित मूल्य परिवर्तन खाते सहित)	59,203.56	55,088.24
5.	कुल परिसंपत्तियाँ	153,384.76	145,976.26
6.	सॉल्वेंसी अनुपात	2.25	1.88

नोट्स:

- अ) प्रीमियम आय अर्थात् सकल लिखित प्रीमियम, पुनर्बीमा का सकल और लागू करों का निवल है।  
 ब) ऊपर उल्लिखित विवरण सेबी (लिस्टिंग और अन्य डिस्कलोजर रिकॉयमेंट्स) विनियम, 2015 के विनियम 33 और विनियम 52 के अंतर्गत स्टॉक एक्सचेंज के साथ फाइल किए गए वित्तीय परिणामों के तिमाही तथा वर्ष के दौरान अब तक के विस्तृत प्रारूप का निष्कर्ष है। तिमाही तथा वर्ष के दौरान अब तक के वित्तीय परिणामों के विस्तृत प्रारूप स्टॉक एक्सचेंज की वेबसाइट ([www.bseindia.com](http://www.bseindia.com) एवं [www.nseindia.com](http://www.nseindia.com)) तथा निगम की वेबसाइट ([www.gicre.in](http://www.gicre.in)) पर उपलब्ध है।

फोर्ब्स 2018 की वैश्विक 2000 सूची में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त:  
 • सर्वश्रेष्ठ सम्मानित कंपनियाँ • विश्व के सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता

मंडल निदेशकों के लिए और उनकी ओर से

स्थान: मुंबई  
 दिनांक: 9 नवंबर, 2022

हस्ताक्षर/-  
**श्री देवेश श्रीवास्तव**  
 अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक  
 डीआईएन 08646006

### भारतीय साधारण बीमा निगम

“सुरक्षा”, 170, जमशेदजी टाटा रोड, चर्चगेट, मुंबई - 400 020, भारत • ई-मेल: [info@gicre.in](mailto:info@gicre.in) • दूरभाष: + 91 22 22867000

CIN : L67200MH1972GOI016133

[www.gicre.in](http://www.gicre.in)

IRDAI Registration No: 112



**भारतीय साधारण बीमा निगम**  
**General Insurance Corporation of India**

सुरक्षा, 170, जे.टाटा रोड, चर्चगेट, मुंबई - 400 020.  
 दूरभाष - 91 22 2286 7000 फैक्स : 91 22 2289 9600  
 ई-मेल : [infogicofindia.com](mailto:infogicofindia.com), [www.gicofindia.in](http://www.gicofindia.in),  
 शाखा कार्यालय : दुबई, लंदन, मलेशिया, प्रतिनिधि कार्यालय : मास्को  
 सार्वभौमिक पुनर्बीमा समाधानकर्ता